दैनिक प्रार्थना

स्तोत्र एवं कवच

संग्रहकर्ता :
पं. कुलपति मिश्र

मूल्य : २०.००

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार

प्रकाशक : **रणधीर प्रकाशन**
रेलवे रोड (आरती होटल के पीछे) हरिद्वार
फोन : (01334) 226297

वितरक : **रणधीर बुक सेल्स**
रेलवे रोड, हरिद्वार
फोन : (01334) 228510

दिल्ली विक्रेता : **गगन बुक डिपो**
4694, बल्लीमारान, दिल्ली-110006
फोन : (011) 23950635

जम्मू विक्रेता : **पुस्तक संसार**
167, नुमाइश का मैदान, जम्मू तवी (ज.का.)

संस्करण : **द्वितीय, सन् 2003**

मुद्रक : **राजा ऑफसेट प्रिंटर्स**, दिल्ली-92

© रणधीर प्रकाशन

DIANIK PRARTHNA (STOTRA & KAVACH)

Compiled By : Pt. Kulpati Mishra
Published By : Randhir Prakashan, Hardwar (INDIA)

अनुक्रम

दैनिक प्रार्थना

शान्ति मन्त्रम्.. ७
गणेश वन्दना.. ८
सरस्वती वन्दना ८
गुरु वन्दना ९
गुरु स्तोत्रम्.. ९
महामृत्युंजय मन्त्रम् (लघु) १०
महामृत्युंजय मन्त्रम् (बृहद).. १०
गायत्री मन्त्रम्.. ११
प्रातः वन्दना.. ११
ईश्वर वन्दना.. १२
कृष्ण स्तुति १२
राम स्तुति १३
राम वन्दना १३
हनुमान स्तुति १३
लक्ष्मी स्तुति १४
पार्वती स्तुति १४
अन्नपूर्णा स्तुति १५

काली स्तुति.. १५
कार्य समर्पणम् १६
उपनिषद् मन्त्र १६
नवग्रह मन्त्र १७
नवग्रहों के गायत्री मन्त्र १८
कल्याण प्रार्थना.. १९
सर्वसुख प्रार्थना.. १९
सद्बुद्धि प्रार्थना १९
अध्ययन मन्त्र.. १९
भोजन मन्त्र.. २०
शयन मन्त्र... २०

स्तोत्र पाठ

श्रीसूक्तम् २१
ऋण मोचन मंगल स्तोत्र.. २४
अन्नपूर्णा स्तोत्र २५
अपराजिता स्तोत्र.. २८
गजेन्द्र मोक्ष स्तोत्र.. ३४
श्री कनकधारा स्तोत्र... ३७
लक्ष्मी स्तोत्र.. ४१
श्री हनुमल्लांगूलास्त्र स्तोत्र ४४

कवच पाठ

नृसिंह कवच ४९

श्री नारायण कवच ५२
श्री नारायण कवच प्रारम्भ ५५
श्री सुदर्शन कवच (१) ६६
श्री सुदर्शन कवच (२) ६८
महा मृत्युञ्जय कवच (१) ७२
श्री महा मृत्युञ्जय कवच (२) ७५
मृत संजीवनी कवच ७६
शीतला स्तुति ७९
पीपल स्तुति ७९
तुलसी स्तुति ७९
प्रदक्षिणा मन्त्र ७९
विसर्जन मन्त्र ७९
तुलसी ग्रहण मन्त्र ८०
क्षमा प्रार्थना ८०

निवेदन

कर्मकाण्ड, उपासना, स्तुति, पूजा-पाठ, आरतियाँ, मन्त्र-तन्त्र, ज्योतिष, व्रत-कथाएँ भजन-कीर्तन, योग, चिकित्सा, वास्तुकला, दृष्टांत, नीति ग्रन्थ, उपनिषद्, वेद एवं भारतीय विद्याओं की पुस्तकें खरीदते समय **रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार** की प्रकाशित पुस्तकें खरीदें क्योंकि शुद्धता, प्रमाणिकता, कागज एवं छपाई का पूरा ध्यान रखा जाता है। जिससे आपको अपने पैसों का पूरा लाभ मिलता है। मूल्य सूची आप फोन करके या पत्र भेजकर मँगवा सकते हैं।

रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार

दैनिक प्रार्थना

शान्ति मन्त्रम्

ॐ सह नाववतु।
सह नौ भुनक्तु।
सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै॥
ॐ शान्तिः! शान्तिः! शान्ति!!

गणेश वन्दना

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटिसमप्रभम्।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

सरस्वती वन्दना

या कुन्देन्दु तुषारहार धवला या शुभ्र वस्त्रावृता।
या वीणा वर दण्ड मण्डितकरा या श्वेत पद्मासना॥
या ब्रह्माच्युत शङ्कर प्रभृतिभिः देवैः सदा वन्दिता।
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेष जाड्यापहा॥

गुरु वन्दना

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वं मम देव देव॥

गुरु स्तोत्रम्

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

महामृत्युंजय मन्त्रम् (लघु)

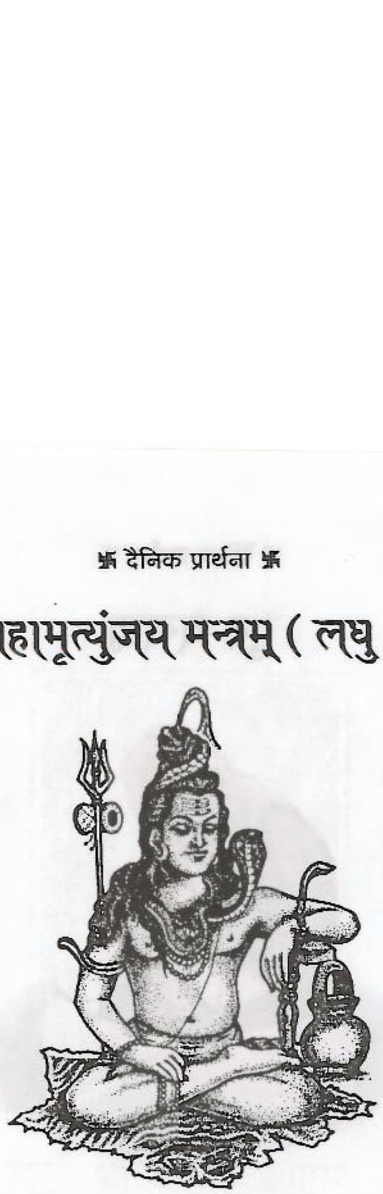

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

महामृत्युंजय मन्त्रम् (बृहद)

ॐ ह्रौं जूँ सः ॐ भूभुर्व स्वः।
ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं।
उर्वारुकमिव बन्धनांन्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।
ॐ स्वः ॐ भुवः भूः ॐ सः जूँ ह्रौं ॐ।

गायत्री मन्त्रम्

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम्
भर्गो देवस्य धीमहि धियो
यो नः प्रचोदयात्।

प्रातः वन्दना

करा‍ग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती।
करमूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते करदर्शनम्॥

ईश्वर वन्दना

मूकं करोति -वाचालं पंगुं लंघयते गिरिम्।
यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्दमाधवम्॥

कृष्ण स्तुति

कृष्णाय वासुदेवाय देवकीनन्दनाय च।
नन्दगोपकुमाराय गोविन्दाय नमो नमः॥

राम स्तुति

माता रामो मत्पिता रामचन्द्रः
स्वामी रामो मत्सखा रामचन्द्रः ।
सर्वस्वं मे रामचन्द्रो दयालुः
नान्यं जाने नैव जाने न जाने ॥

राम वन्दना

दक्षिणे लक्ष्मणो यस्यवामे च जनकात्मजा।
पुरतो मारुतिर्यस्य तं वन्दे रघुनन्दनम्॥

हनुमान स्तुति

मनोजवं मारुत् तुल्य वेगं, जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये,
उलंघ्य सिंधोसलिलं, सलीलं, यः शोकवहिन् जनकात्मजाया:
आदाय तेनैव ददाह लंकां, नमामि तं प्रांजलि आंजनेयम्।

लक्ष्मी स्तुति

पद्मासने स्थिते देवि, परब्रह्मस्वरूपिणी।
सर्वदुःख हरे देवि, महालक्ष्मी नमोऽस्तुते॥

पार्वती स्तुति

ॐ सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यंबके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते॥

अन्नपूर्णा स्तुति

अन्नपूर्णे सदापूर्णे शंकर प्राण वल्लभे,
ज्ञान वैराग्य सिद्धयर्थ भिक्षां देहि मे पार्वती।

काली स्तुति

काली काली महाकाली कालिके परमेश्वरी,
सर्वानन्द करे देवि नारायणी नमोऽस्तुते।

कार्य समर्पणम्

कायेन वाचा मनसौन्द्रियैर्वा
बुद्ध्यात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यत्यद् सकलं परस्मै
नारायणायेति समर्पयामि॥

उपनिषद् मन्त्र

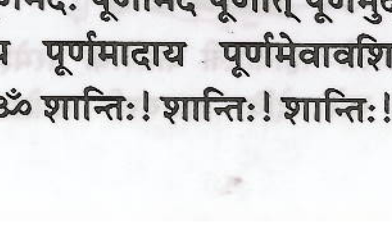

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥
ॐ शान्तिः! शान्तिः! शान्तिः!!

नवग्रह मन्त्र

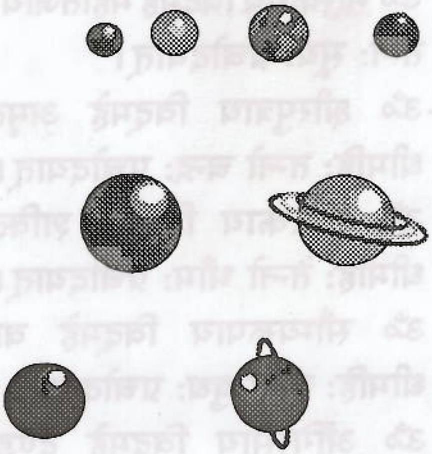

१. सूर्य — ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।
२. चन्द्र — ॐ श्राँ श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः।
३. मंगल — ॐ क्राँ क्रीं क्रौं सः भौमाये नमः।
४. बुध — ॐ ब्राँ ब्रीं ब्रौं सः बुधाये नमः।
५. गुरु — ॐ ग्राँ ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः।
६. शुक्र — ॐ द्राँ द्रीं द्रौं सः शुक्राये नमः।
७. शनि — ॐ प्राँ प्रीं प्रौं सः शनये नमः।
८. राहु — ॐ भ्राँ भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः।
९. केतु — ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः।

नवग्रहों के गायत्री मन्त्र

१. सूर्य— ॐ भास्कराय विद्महे महातेजाय धीमहिः तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्।

२. चन्द्रमा—ॐ क्षीरपुत्राय विद्महे अमृततत्वाय धीमहिः तन्नो चन्द्रः प्रचोदयात्।

३. मंगल— ॐ अंगरकाय विद्महे शक्तिहस्ताय धीमहिः तन्नो भौमः प्रचोदयात्।

४. बुध— ॐ सौम्यरूपाय विद्महे वाणेशाय धीमहिः तन्नो बुधः प्रचोदयात्।

५. गुरु— ॐ अंगिरसाय विद्महे दण्डायुधाय धीमहिः तन्नो जीवः प्रचोदयात्।

६. शुक्र— ॐ भृगुसुताय विद्महे दिव्यदेहाय धीमहिः तन्नः शुक्रः प्रचोदयात्।

७. शनि— ॐ सूर्यपुत्राय विद्महे मृत्युरूपाय धीमहिः तन्नः सौरिः प्रचोदयात्।

८. राहु— ॐ शिरोरूपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहिः तन्नः राहुः प्रचोदयात्।

९. केतु— ॐ गदाहस्ताय विद्महे अमृतेशाय धीमहिः तन्नः केतु प्रचोदयात।

कल्याण प्रार्थना

ॐ सर्वेषां स्वस्तिर्भवतु।
सर्वेषां शान्तिर्भवतु।
सर्वेषां पूर्णं भवतु।
सर्वेषां मङ्गलं भवतु।

सर्वसुख प्रार्थना

ॐ सर्वे भवन्तु सुखिनः।
सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु।
मा कश्चित् दुःखभाक् भवेत्॥

सद्बुद्धि प्रार्थना

ॐ असतो मा सद्गमय।
तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्माऽमृतं गमय॥
ॐ शान्तिः! शान्तिः! शान्तिः!!

अध्ययन मन्त्र

सरस्वति नमस्तुभ्यं वरदे कामरूपिणि।
विद्यारम्भं करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सदा॥

भोजन मन्त्र

ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्।
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना॥

शयन मन्त्र

करचरणकृतं वाक्-कायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम्।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शंभो।

देवी-देवताओं की सम्पूर्ण पूजा के लिए अन्य पुस्तकें

१. नित्यकर्म पद्धति और पूजा विधान
२. पंचांग देवता पूजन चन्द्रिका
३. सर्वदेव पूजा पद्धति
४. वृहद पूजा भास्कर
५. कर्मकाण्ड भारती
६. सम्पूर्ण हवन पद्धति
७. श्री दुर्गा रहस्य : दुर्गा उपासना पद्धति
८. नवनाथ उपासना
९. हनुमान : बालाजी उपासना
१०. शनि उपासना

रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार

स्तोत्र पाठ

श्रीसूक्तम्

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह॥१॥
तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥२॥
अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम्।
श्रियं देवीमुप ह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥३॥
कां सोस्मितां हिरण्यप्रकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम्॥४॥

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मिनीमीं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे॥ ५॥
आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु या अन्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः॥ ६॥
उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥ ७॥
क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्॥ ८॥
गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोप ह्वये श्रियम्॥ ९॥
मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥ १०॥
कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥ ११॥
आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥ १२॥
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह॥ १३॥
आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह॥ १४॥
तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्॥ १५॥

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्॥१६॥
पद्मानने पद्मविपद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि।
विश्वप्रिये विष्णुमनोऽनुकूले त्वत्पादपद्मं मयि सं नि धत्स्व॥१७॥
पद्मानने पद्मऊरू पद्माक्षि पद्मसम्भवे।
तन्मे भजसि पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम्॥१८॥
अश्वदायि गोदायि धनदायि महाधने।
धनं मे जुषतां देवि सर्वकामांश्च देहि मे॥१९॥
पुत्रपौत्रधनं धान्यं हस्त्यश्वाश्वतरी रथम्।
प्रजानां भवसि माता आयुष्मन्तं करोतु मे॥२०॥
धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः।
धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्वरुणो धनमश्विना॥२१॥
वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा।
सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं ददातु सोमिनः॥२२॥
न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः।
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्त्या श्रीसूक्तजापिनाम्॥२३॥
सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुकगन्धमाल्यशोभे।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम्॥२४॥
विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम्।
लक्ष्मीं प्रियसखीं भूमिं नमाम्यच्युतवल्लभाम्॥२५॥
महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्॥२६॥

आनन्दः कर्दमः श्रीदश्चिक्लीत इति विश्रुताः।
ऋषयः श्रियः पुत्राश्च श्रीर्देवीर्देवता मताः॥२७॥
ऋणरोगादिदारिद्र्यपापक्षुदपमृत्यवः।
भयशोकमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा॥२८॥
श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधाच्छोभमानं महीयते।
धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः॥२९॥

ऋण मोचन मंगल स्तोत्र

आज के युग में प्रायः किसी-न-किसी रूप में व्यक्ति ऋण ग्रसित हो जाया करता है। इस ऋणमोचन हेतु नीचे ऋण मोचन मंगल स्तोत्र पाठकों के लाभार्थ दिया जा रहा है। इसके पाठ करने से भगवती इस प्रकार की स्थिति तथा वातावरण अनुकूल कर देती है ताकि साधक का ऋण खत्म हो जाए तथा आमदन में वृद्धि हो। इसका ५१ पाठ करके दशांश तिल घी से हवन करना चाहिये।

मङ्गलो भूमिपुत्रश्च ऋणहर्ता धनप्रदः।
स्थिरासनो महाकायः सर्वकर्मावरोधकः॥१॥
लोहितो लोहिताङ्गश्च सामगानां कृपाकरः।
धरात्मजः कुजो भौमो भूतिदो भूमिनन्दनः॥२॥
अङ्गारको यमश्चैव सर्वरोगापहारकः।
वृष्टे कर्ताऽपहर्ता च सर्वकामफलप्रदः॥३॥
एतानि कुजनामानि नित्यं यः श्रद्धया पठेत्।
ऋणं न जायते तस्य धनं शीघ्रमवाप्नुयात्॥४॥
धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्ति-समप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं च मङ्गलं प्रणमाम्यहम्॥५॥

स्तोत्रमङ्गारकस्यैतत् पठनीयं सदा नृभिः।
न तेषां भौमजा पीडा स्वल्पाऽपि भवति क्वचित्॥ ६॥
अङ्गारक! महाभान! भगवन्! भक्तवत्सल!
त्वां नमामि ममाशेषमृणमाशु विनाशय॥ ७॥
ऋणरोगादि-दारिद्र्यं ये चाऽन्ये ह्यपमृत्यवः।
भय-क्लेश-मनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा॥ ८॥
अतिवक्र! दुराराध्य! भोगमुक्तजितात्मनः।
तुष्टो ददासि साम्राज्यं रुष्टो हरसि तत्क्षणात्॥ ९॥
विरिञ्च-शक्र-विष्णूनां मनुष्याणां तु का कथा।
तेन त्वं सर्वसत्त्वेन ग्रहराजो महाबलः॥ १०॥
पुत्रान् देहि धनं देहि त्वामस्मि शरणं गताः।
ऋणदारिद्र्यदुःखेन शत्रूणां च भयात्ततः॥ ११॥
एभिर्द्वादशभिः श्लोकैर्यः स्तौति च धरासुतम्।
महतीं श्रियमाप्नोति ह्यपरो धनदो युवा॥ १२॥

अन्नपूर्णा स्तोत्र

इस अन्नपूर्णा स्तोत्र के श्रद्धापूर्वक निरन्तर प्रातःकाल पाठ करने से गिरिराज-कुमारी पार्वती प्रसन्न होकर धन-धान्य आदि से अपने भक्त को परिपूर्ण करती हैं। जो मनुष्य सहज में थोड़े परिश्रम से ही अपने दुःख-दारिद्रय का अन्त देखना चाहता है वह जगत्माता श्री अन्नपूर्णा देवी की आराधना को ही सर्वोपरि मानकर अपना महान् धर्म एवं कर्तव्य बना ले, ऐसा करने से मनुष्य का दुःखदायक जीवन सुखपूर्वक व्यतीत हो जाता है और उसका

जीवन एक सात्विक एवं सफल जीवन बन जाता है।

नित्यानन्दकरी वराभयकरी सौन्दर्य रत्नाकरी
निर्धूताखिलघोर पावनकारी प्रत्यक्ष माहेश्वरी।
प्रालेयाचलवंश पावनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माता अन्नपूर्णेश्वरी॥ १॥
नाना रत्न विचित्र भूषणकरी हेमाम्बराडम्बरी
मुक्ता हारविलम्बमान विलसद्वक्षोज कुम्भान्तरी।
काश्मीरा गुरुवासितारुचिकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहिकृपावलम्बनकरी माता अन्नपूर्णेश्वरी॥ २॥
योगानन्द करी रिपुक्षयकरी धर्मार्थ निष्ठाकरी
चन्द्रार्कानलभासमानलहरी त्रैलोक्य रक्षाकरी।
सर्वैश्वर्य समस्तवाञ्छितकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षा कृपावलम्बकरी माता अन्नपूर्णेश्वरी॥ ३॥
कैलासाचलकन्दरालयकरी गौरी उमा शंकरी
कौमारी निगमार्थगोचर करी ओंकारबीजाक्षरी।
मोक्ष द्वार कपाट पाटनकरी काशी पुराधिश्वरी
भिक्षां देहिकृपावलम्बनकरी माता अन्नपूर्णेश्वरी॥ ४॥
दृश्यादृश्यप्रभूतवाहन करी ब्रह्माण्डभाण्डोदरी
लीला नाटक सूत्र भेदनकरी विज्ञानदीपांकुरी।
श्री विश्वेशमनः प्रसादनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहिकृपावलम्बनकरी माता अन्नपूर्णश्वरी॥ ५॥
उर्वीसर्वजनेश्वरी भगवती माताऽन्नपूर्णेश्वरी
वेणीनीलसमान कुम्भलहरी नित्यान्नदानेश्वरी

सर्वानन्न करी दशाशुभकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहिकृपावलम्बनकरी माता अन्नपूर्णेश्वरी ॥ ६ ॥
आदीशान्तसमस्तवर्णनकरी शम्भोस्त्रिभावाकरी
काश्मीरा त्रिजनेश्वरी त्रिलहरी नित्यांकुरा।
शर्वरी कामाकांक्षरी जनोदयकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहिकृपावलम्बनकरी माता अन्नपूर्णेश्वरी ॥ ७ ॥
देवी सर्वविचित्ररत्नर चिता दाक्षायणी सुन्दरी
वामस्वादुपयोधर प्रियकरी सौभाग्यमाहेश्वरी।
भक्ताभीष्टकरी दशाशुभकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहिकृपावलम्बनकरी माता अन्नपूर्णेश्वरी ॥ ८ ॥
चन्द्रार्कानल कोटिकोटिसदृशाचन्द्रांशुबिम्बाधरी
चन्द्रार्काग्निसमानकुण्डलधरी चन्द्रर्कवर्णेश्वरी।
मालापुस्तकपाशकांकुशधरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहिकृपावलम्बनकरी माता अन्नपूर्णेश्वरी ॥ ९ ॥
क्षत्रत्राणकरी महाभयकरी माता कृपासागरी
साक्षान्मोक्षकरी सदाशिवकरी विश्वेश्वरश्रीधरी।
दक्षाक्रन्दकरी निरामयकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहिकृपावलम्बनकरी माता अन्नपूर्णेश्वरी ॥ १० ॥
अन्नपूर्णे सदापूर्णे शंकर प्राणवल्लभे।
ज्ञानवैराग्यसिद्ध्यर्द्धं भिक्षां देहि च पार्वति ॥ ११ ॥
माता में पार्वती देवी पिता देवो महेश्वरः।
बान्धवाः शिवभक्तताश्च स्वदेशो भुवत्रयम् ॥ १२ ॥

अपराजिता स्तोत्र

इस स्तोत्र का विधिवत पाठ करने से सब प्रकार के रोग तथा सब प्रकार के शत्रु और सब बन्ध्या दोष नष्ट होता है। विशेष रूप से मुकदमें में सफलता और राजकीय कार्यों में अपराजित रहने के लिए यह पाठ रामबाण है।

ॐ नमोऽपराजितायै। ॐ अस्या वैष्णव्याः पराया अजिताया महाविद्यायाः॥ वामदेव-बृहस्पति-मार्केण्डेया ऋषयः। गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहती छन्दांसि लक्ष्मीनृसिंहो देवता। ॐ क्लीं श्रीं ह्रीं बीजम्। हुं शक्तिः। सकलकामनासिद्ध्यर्थम् अपराजितविद्यामन्त्रपाठे विनियोगः। ॐ नीलोत्पलदलश्यामां भुजंगाभरणान्विताम्। शुद्धस्फटिकसंकाशां चन्द्रकोटिनिभाननाम्॥ शंखचक्रधरां देवी वैष्णवीमपराजिताम् बालेन्दुशेखरां देवीं वरदाभयदायिनीम॥ नमस्कृत्य पपाठैनां मार्कण्डेयो महातपाः। मार्ककण्डेय उवाच-शृणुष्वं मुनयः सर्वे सर्वकामार्थसिद्धिदाम्। असिद्धसाधनीं देवीं वैष्णवीमपराजिताम्॥ ॐ नमो नारायणाय, नमो भगवते वासुदेवाय, नमोस्त्वनन्ताय, सहस्रशीर्षाय, क्षीरोदार्णवशायिने, शेष भोगपर्य्यङ्काय, गरुड़वाहनाय, अमोघाय, अजाय, अजिताय, पीतवाससे, ॐ वासुदेव, संकर्षण प्रद्युम्न, अनिरुद्ध, हयग्रीव, मत्स्य, कूर्म्म, वाराह, नृसिंह, अच्युत, वामन, त्रिविक्रम, श्रीधर, राम, राम, राम। वरद, वरद, वरदो भव, नमोऽस्तु ते, नमोऽस्तुते, स्वाहा, ॐ असुर-दैत्य-यक्ष-

राक्षस-भूत-प्रेत-पिशाच-कूष्माण्ड-सिद्ध-योगिनी-डाकिनी-शाकिनी-स्कन्दग्रहान् उपग्रहान्नक्षत्रग्रहांश्चान्या् हन हन् पच पच मथ मथ विध्वंसय विध्वंसय विद्रावय विद्रावय चूर्णय चूर्णय शंखेन चक्रेण बज्रेण शूलेन गदया मुसलेन हलेन भस्मीकुरु कुरु स्वाहा। ॐ सहस्रबाहो सहस्रप्रहरणायुध, जय जय, विजय विजय, अजित, अमित, अपराजित, अप्रतिहत, सहस्रनेत्र, ज्वल ज्वल, प्रज्वल प्रज्वल, विश्वरूप बहुरूप, मधुसूदन, महावराह, महापुरुष, वैकुण्ठ, नारायण, पद्मनाभ, गोविन्द, दामोदर, हृषीकेश, केशव, सर्वासुरोत्सादन, सर्व भूतवशंकर, सर्वदुःस्वप्नप्रभेदन, सर्वयंत्रप्रभञ्जन, सर्वनागविमर्दन, सर्वदेवमहेश्वर, सर्वबन्धविमोक्षण, सर्वाहितप्रमर्दन, सर्वज्वरप्रणाशन, सर्वग्रहनिवारण, सर्वपापप्रशमन, जनार्दन, नमोऽस्तुते स्वाहा। विष्णोरियमनुप्रोक्ता सर्वकामफलप्रदा। सर्वसौभाग्यजननी सर्वभीतिविनाशिनी। सर्वैश्च पठितां सिद्धैर्विष्णोः परमवल्लभा। नानया सदृशं किंचिद्दुष्टानां नाशनं परम्। विद्या रहस्या कथिता वैष्णव्येषापराजिता। पठनीया प्रशस्ता वा साक्षात्सत्त्वगुणाश्रया। ॐ शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि ह्यभ्यामपराजिताम्। या शक्तिर्मामकी वत्स रजोगुणमयी मता। सर्वसत्त्वमयी साक्षात्सर्वमंत्रमयी च या। या स्मृता पूजिता जप्ता न्यस्ता कर्मणि योजिता। सर्वकामदुधा वत्स! शृणुष्वैतां ब्रवीमि ते। य इमामपराजितां

परमवैष्णवीमप्रतिहतां पठति सिद्धां स्मरति सिद्धां महाविद्यां जपति पठति शृणोति स्मरति धारयति कीर्तयति वा न तस्याग्निवायुवज्रोपलाशनिवर्षभयं, न समुद्रभयं, न ग्रहभयं, न चौरभयं, न शत्रुभयं, न शापभयं वा भवेत्। क्वचिद्रात्र्यन्धकारस्त्रीराजकुलविद्वेषि-विषगरगरदवशीकरण-विद्वेष्णोच्चाटनवधबन्धनभयं वा न भवेत्। एतैर्मन्त्रैरुदाहृतैः सिद्धैः संसिद्धपूजितैः। ॐ नमोऽस्तुते। अभये, अनघे, अजिते, अमिते, अमृते, अपरे, अपराजिते पठति सिद्धे जपति सिद्धे, स्मरति सिद्धे, एकोनाशीतितमे, एकाकिनि, निश्चेतसि, सुद्रुमे, सुगन्धे, एकान्नशे, उमे ध्रुवे, अरुन्धति, गायत्रि, सावित्रि, जातवेदसि, मानस्तोके, सरस्वति, धरणि, धारणि, सौदामनि, अदिति, दिति, विनते, गौरि, गांधारि, मातंगी कृष्णे, यशोदे, सत्यवादिनि, ब्रह्मवादिनि, कालि, कपालिनि, करालनेत्रे, भद्रे, निद्रे, सत्योपयाचनकरि, स्थलगतं जलगतं अन्तरिक्षगतं वा मां रक्ष सर्वोपद्रवेभ्यः स्वाहा। यस्याः प्रणश्यते पुष्पं गर्भो वा पतते यदि। म्रियते बालको यस्याः काकबन्ध्याच या भवेत्॥ धारयेद्या इमां विद्यामेतैर्दोषैर्न लिप्यते॥ गर्भिणी जीववत्सा स्यात्पुत्रिणीस्यान्न संशयः। भूर्जपत्रे त्विमां विद्यां लिखित्वा गन्धचन्दनैः॥ एतैर्दोषैर्न लिप्येत सुभगा पुत्रिणी भवेत्। रणे राजकुले द्यूते नित्यं तस्य जयो भवेत्। शस्त्रं वारयते ह्योषा समरे काण्डदारुणे। गुल्मशूलाक्षिरोगाणां क्षिप्रं नाश्यति च व्यथाम्॥ शिरोरोगज्वराणां न नाशिनी सर्वदेहिनाम्। इत्येषा कथिता विद्या अभयाख्याऽपराजिता॥ एतस्याः स्मृतिमात्रेण

भयं क्वापि न जायते। नोपसर्गा न रोगाश्च न योधा नापि तस्कराः॥ न राजानो न सर्पाश्च न द्वेष्टारो न शत्रवः। यक्षराक्षसवेताला न शाकिन्यो न च ग्रहाः॥ अग्नेर्भयं न वाताच्च न समुद्रान्न वै विषात्। कार्मणं वा शत्रुकृतं वशीकरणमेव च॥ उच्चाटनं स्तम्भनं च विद्वेषणमथापि वा। न किञ्चित्प्रभवेत्तत्र यत्रैषा वर्ततेऽभया। पठेद् वा यदि वा चित्रे पुस्तके वा मुखेऽथवा॥ हृदि वा द्वारदेशे वा वर्त्तते ह्यभयः पुमान्॥ हृदये विन्यसेदेतां ध्यायेद्देवींचतुर्भुजाम्॥ रक्तमाल्याम्बरधरां पद्मरागसप्रभाम्। पाशांकुशाभयवैरलं-कृतसुविग्रहाम्॥ साधकेभ्यः प्रयच्छनतीं मन्त्रवर्णामृतान्यपि। नातः परतरं किञ्चिद्वशीकरणमनुत्तमम्॥ रक्षणं पावनं चापि नात्र कार्या विचारणा। प्रातः कुमारिकाः पूज्याः खाद्यैराभरणैरपि॥ तदिदं वाचनीयं स्यात्तत्प्रीत्या प्रीयते तु माम्। ॐ अथातः सम्प्रवक्ष्यामि विद्यामपि महाबलाम्। सर्वदुष्टप्रशमनीं सर्वशत्रुक्षयंकरीम्॥ दारिद्र्यदुःखशमनीं दौर्भाग्यव्याधिनाशिनीम्। भूतप्रेतपिशाचानां यक्षगन्धर्व-रक्षसाम्॥ डाकिनी शकिनी-स्कंध-कूष्माण्डानां च नाशिनीम्। महारौद्रीं महाशक्तिं सद्यः प्रत्ययकारिणीम्। गोपनीयं प्रयत्नेन सर्वस्वं पार्वतीपतेः। तामहं ते प्रवक्ष्यामि सावधानमनाः शृणु। एकान्हिकं द्व्यन्हिकं च चातुर्थिकार्द्धमासिकम्। द्वैमासिकं त्रैमासिकं तथा चातुर्मासिकम्। पाञ्चमासिकं षाड्मासिकं वातिक पैतिकज्वरम्। श्लैष्मिकं सान्निपातिकं तथैव सततज्वरम्। मौहूर्तिकं पैत्तिकं शीतज्वरं विषमज्वरम्। द्व्यहिनकं

त्रयह्निकं चैव ज्वरमेकाह्निकं तथा। क्षिप्रं नाशयते नित्यं स्मरणादपराजिता। ॐ ह्रीं हन हन, कालि शर शर, गौरि धम, धम, विद्ये आले ताले माले गंधे बंधे पच पच विद्ये नाशय नाशय पापं हर हर संहारय वा दुःखस्वप्नविनाशिनि कमलस्थिते विनायकमातः रजनि सन्ध्ये, दुन्दुभिनादे, मानसवेगे, शंखिनि, चाक्रणि गदिनि वज्रिणि शूलिनि अपस्मृत्युविनाशिनि विश्वेश्वरि द्रविडि द्राविडि द्रविणि द्राविणि केशवदयिते पशुपतिसहिते दुन्दुभिदमनि दुर्म्मददमनि। शबरि किराति मातंगि ॐ द्रं द्रं ज्रं ज्रं क्रं क्रं तुरु तुरु ॐ द्रं कुरु कुरु। ये मां द्विषन्ति प्रत्यक्षं परोक्षं परोक्षं वा तान् सर्वान् दम दम मर्दय मर्दय तापय तापय गोपय पातय पातय शोषय शोषय उत्सादय उत्सादव ब्रह्माणि वैष्णवि माहेश्वरि कौमारि वाराहि नारसिंहि ऐन्द्रि चामुण्डे महालक्ष्मि वैनायिकि औपेन्द्रि आग्नेयि चण्डि नैर्ऋति वायव्ये सौम्ये ऐशानि ऊर्ध्वमधोरक्ष प्रचंडविद्ये इन्द्रोपेन्द्र भगिनि। ॐ नमो देवि जये विजये शांति स्वस्ति-तुष्टि-पुष्टि-विवर्द्धिनि। कामांकुशे कामदुघे सर्वकामवरप्रदे। सर्वभूतेषु मां प्रियं कुरु कुरु स्वाहा। आकर्षणि आवेशनि। ज्वालामालिनि रमणि रामणि, धरणि धारनणि, तपनि तापिनि, मदनि मादिनि, शोषणि संमोहिनि नीलपताके महानीले महागौरिरि महाश्रिये। महाचांद्रि महासौरि महामायूरि आदित्यरश्मि जाह्नवि। यमघंटे किणि किणि चिन्तामणि। सुगन्धे सुरभे सुरासुरोत्पन्ने सर्वकामदुघे यद्यथा मनीषितं कार्यं तन्मम सिद्ध्यतु स्वाहा। ॐ स्वाहा। ॐ भूः स्वाहा। ॐ भुवः

स्वाहा। ॐ स्वः स्वहा। ॐ महः स्वाहा। ॐ जनः स्वाहा। ॐ तपः स्वाहा। ॐ सत्यं स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा। यत एववागतं पापं तत्रैव प्रतिगच्छतु स्वाहेत्योम्। अमोघैषा महाविद्या वैष्णवी चापराजिता। स्वयं विष्णुप्रणीता च सिद्धेयं पाठतः सदा। एषा महाबला नाम कथिता तेऽपराजिता। नानया सदृशी रक्षा त्रिषु लोकेषु विद्यते। तमोगुणमयी साक्षाद्रौद्री शक्तिरियं मता। कृतान्तोऽपि यतो भीतः पादमूले व्यवस्थितः। मूलधारे न्यसेदेतां रात्रावेनां च संस्मरेत्। नीलजीमूतसंकाशां तडित्कपिलकेशिकाम्। उद्यदादित्यसंकाशां नेत्रत्रय-विराजिताम्। शक्तिं त्रिशूलं शंखं च पानपात्रं च विभ्रतीम्। व्याघ्रचर्मपरीधानां किंकिणीजालमण्डिताम्। धावंतीं गगनस्यांतः तादुकाहितपादकाम्। दंष्ट्राकरालवदनां व्यालकुण्डलभूषिताम्। व्यात्तवक्त्रां ललज्जिह्वां भृकुटीकुटिलालकाम्। स्वभक्तद्वेषिणां रक्तं पिबन्तीं पानपात्रतः। सप्तधातून् शोषयन्तीं क्रूरदृष्ट्या विलोकनात्। त्रिशूलेन च तज्जिह्वां कीलयनतीं मुहुर्मुहः। पाशेन बद्ध्वा तं साधमानयन्तीं तदन्तिके। अर्द्धरात्रस्य समये देवीं ध्यायेन्महाबलाम्। यस्य यस्य बदेन्नाम जपेन्मन्त्रं निशान्तके। तस्य तस्य तथावस्थां कुरुते सापि योगिनी। ॐ बले महाबले असिद्धसाधनी स्वाहेत्या अमोघां पठति सिद्धां श्रीवैष्णवीम्॥ श्रीमद्पराजितविद्यां ध्यायेत्। दुःस्वप्ने दुरारिष्टे च दुर्निमित्ते तथैव च। व्यवहारे भेवेत्सिद्धिः पठेद्विघ्नोपशान्तये॥

यदत्र पाठे जगदम्बिके मया विसर्गबिन्द्वऽक्षरहीनमीडितम्।

ततस्तु सम्पूर्णतमं प्रयान्तु में संकल्पसिद्धिस्तु सदैव जायताम्॥१॥

तव तत्त्वं न जानामि कीदृशेंसि महेश्वरि।
यादृशसि महादेवी तादृशायै नमो नमः॥

गजेन्द्र मोक्ष स्तोत्र

अगर व्यक्ति संकट में है, चाहे किसी प्रकार का भी संकट हो इस स्तोत्र का पाठ करने से संकट से निवृत्त होकर इष्ट सिद्धि शीघ्र होती है।

श्री शुक उवाच

एवं व्यवसितो बुद्धया समाधाय मनो हृदि।
जजाप परमं जाप्यं प्राग्जन्मन्यनुशिक्षितम्॥ १॥

गजेन्द्र उवाच

ॐ नमो भगवते तस्मै यत एतच्चिदात्मकम्।
पुरूषायादिबीजाय परेशायाभिधीमहि॥ २॥
यस्मिन्निदं यतश्चेदं येनेदं य इदं स्वयम्।
योऽस्मात्परस्माच्च परस्तं प्रपद्ये स्वयम्भुवम्॥ ३॥
यः स्वात्मनीदं निजमाययार्पितं क्वचिद्विभातं क्व च तत्तिरोहितम्।
अविद्धदृक् साक्ष्युभयं तदीक्षते स आत्ममूलोऽवतु मां परात्परः॥४॥
कालेन पञ्चत्वमितेषु कृत्स्नशो लोकेषु पालेषु च सर्वहेतुषु।
तमस्तदाऽऽसीद् गहनं गभीरं यस्तस्य पारेऽभिविराजते विभुः॥ ५॥
न यस्य देवा ऋषयः पदं विदुर्जन्तुः पुनः कोऽर्हति गन्तुमीरितुम्।
यथा नटस्याकृतिभिर्विचेष्टतो दुरत्ययानुक्रमणः स मावतु॥ ६॥
दिदृक्षवो यस्य पदं सुमङ्गलं विमुक्तसङ्गा मुनयः सुसाधवः।

चरन्त्यलोकव्रतमव्रणं वने भूतात्मभूताः सुहृदः स मे गतिः॥ ७॥
न विद्यते यस्य च जन्म कर्म वा न नामरूपे गुणदोष एव वा।
तथापि लोकाप्ययसम्भवाय यः स्वमायया तान्यनुकालमृच्छति॥ ८॥
तस्मै नमः परेशाय ब्रह्मणेऽनन्तशक्तये।
अरूपायोरुरूपाय नम आश्चर्यकर्मणे॥ ९॥
नमः आत्मप्रदीपाय साक्षिणे परमात्मने।
नमो गिरां विदूराय मनसश्चेतसामपि॥ १०॥
सत्त्वेन प्रतिलभ्याय नैष्कर्म्येण विपश्चिता।
नमः कैवल्यनाथाय निर्वाणसुखसंविदे॥ ११॥
नमः शान्ताय घोराय मूढाय गुणधर्मिणे।
निर्विशेषाय साम्याय नमो ज्ञानघनाय च॥ १२॥
क्षेत्रज्ञाय नमस्तुभ्यं सर्वाध्यक्षाय साक्षिणे।
पुरुषायात्ममूलाय मूलप्रकृतये नमः॥ १३॥
सर्वेन्द्रियगुणद्रष्ट्रे सर्वप्रत्ययहेतवे।
असताच्छाययोक्ताय सदाभासाय ते नमः॥ १४॥
नमो नमस्तेऽखिलकारणाय निष्कारणायाद्भुतकारणाय।
सर्वागमाम्नायमहार्णवाय नमोऽपवर्गाय परायणाय॥ १५॥
गुणारणिच्छन्नचिदूष्मपाय तत्क्षोभविस्फूर्जितमानसाय।
नैष्कर्म्यभावेन विवर्जितागमस्वयंप्रकाशाय नमस्करोमि॥ १६॥
मादृक्प्रपन्नपशुपाशविमोक्षणाय मुक्ताय भूरिकरुणाय नमोऽलयाय।
स्वांशेन सर्वतनुभृन्मनसि प्रतीतप्रत्यग्दृशे भगवते बृहते नमस्ते॥ १७॥
आत्मात्मजाप्तगृहवित्तजनेषु सक्तैर्दुष्प्रापणाय गुणसङ्गविवर्जिताय।
मुक्तात्मभिः स्वहृदये परिभाविताय
ज्ञानात्मने भगवते नम ईश्वराय॥ १८॥

यं धर्मकामार्थविमुक्तिकामा भजन्त इष्टां गतिमाप्नुवन्ति।
किं त्वाशिषो रात्यपि देहमव्ययं करोतु मेऽदभ्रदयो विमोक्षणम्॥ १९॥
एकान्तिनो यस्य न कंचनार्थं वाञ्छन्ति ये वै भगवत्प्रपन्नाः।
अत्यद्भुतं तच्चरितं सुमङ्गलं गायन्त आनन्दसमुद्रमग्नाः॥ २०॥
तमक्षरं ब्रह्म परं परेशमव्यक्तमाध्यात्मिकयोगगम्यम्।
अतीन्द्रियं सूक्ष्ममिवातिदूरमनन्तमाद्यं परिपूर्णमीडे॥ २१॥
यस्य ब्रह्मादयो देवा वेदा लोकाश्चराचराः।
नामरूपविभेदेन फल्ग्व्या च कलया कृताः॥ २२॥
यथार्चिषोऽग्नेः सवितुर्गभस्तयो निर्यान्ति संयान्त्यसकृत् स्वरोचिषः।
तथा यतोऽयं गुणसम्प्रवाहो बुद्धिर्मनः खानि शरीरसर्गाः॥ २३॥
स वै न देवासुरमर्त्यतिर्यङ् न स्त्री न षण्ढो न पुमान् न जन्तुः।
नायं गुणः कर्म न सन्न चासन् निषेधशेषो जयतादशेषः॥ २४॥
जिजीविषे नाहमिहामुया किमन्तर्बहिश्चावृतयेभयोन्या
इच्छामि कालेन न यस्य विप्लवस्तस्यात्मलोकावरणस्य मोक्षम्॥ २५॥
सोऽहं विश्वसृजं विश्वमविश्वं विश्ववेदसम्।
विश्वात्मानमजं ब्रह्म प्रणतोऽस्मि परं पदम्॥ २६॥
योगरन्धितकर्माणो हृदि योगविभाविते।
योगिनो यं प्रपश्यन्ति योगेशं तं नतोऽस्म्यहम्॥ २७॥
नमो नमस्तुभ्यमसह्यवेगशक्तित्रयायाखिलधीगुणाय।
प्रपन्नपालाय दुरन्तशक्तये कदिन्द्रियाणामनवाप्यवर्त्मने॥ २८॥
नायं वेद स्वमात्मानं यच्छक्त्याहंधिया हतम्।
तं दुरत्ययमाहात्म्यं भगवन्तमितोऽस्म्यहम्॥ २९॥
एवं गजेन्द्रमुपवर्णितनिर्विशेषं ब्रह्मादयो विविधलिङ्गभिदाभिमानाः।

नैते यदोपससृपुर्निखिलात्मकत्वात्
तत्राखिलामरमयो हरिराविरासीत्॥ ३० ॥
तं तद्वदार्त्तमुपलभ्य जगन्निवासः
स्तोत्रं निशम्य दिविजैः सह संस्तुवद्भिः।
छन्दोमयेन गरूडेन समुह्यमान-
श्चक्रायधोऽभ्यगमदाशु यतो गजेन्द्रः॥ ३१ ॥
सोऽन्तस्सरस्युरूबलेन गृहीत आर्त्तो
दृष्ट्वा गरूत्मति हरिं ख उपात्तचक्रम्।
उत्क्षिप्य साम्बुजकरं गिरमाह कृच्छ्रा-
न्नारायणाखिलगुरो भगवन् नमस्ते॥ ३२ ॥
तं वीक्ष्य पीडितमजः सहसावतीर्य
सग्राहमाशु सरसः कृपयोज्जहार।
ग्राहाद् विपाटितमुखादरिणा गजेन्द्रं
सम्पश्यतां हरिरमूमुचदुस्त्रियाणाम्॥ ३३ ॥

श्री कनकधारा स्तोत्र

इसके श्रद्धापूर्वक पाठ-अनुष्ठान से ऋण मुक्ति और लक्ष्मी प्राप्ति होती है। कहा जाता है कि आचार्य शंकर ने इसका पाठ करके स्वर्ण वर्षा कराई थी।

अङ्गं हरेः पुलकभूषणमाश्रयन्ती
भृङ्गाङ्गनेव मुकुलाभरणं तमालम्।
अङ्गीकृताखिलविभूतिरपाङ्गलीला
माङ्गल्यदाऽस्तु मम मङ्गलदेवतायाः॥ १ ॥

मुग्धा मुहुर्विदधती वदने मुरारेः
प्रेमत्रपाप्रणिहितानि गतागतानि।
माला दृशोर्मधुकरीव महोत्पले या
सा मे श्रियं दिशतु सागरसम्भवायाः ॥ २ ॥

विश्वामरेन्द्र पदविभ्रमदानदक्षम्
आनन्दहेतुरधिकं मुरविद्विषोऽपि।
ईषन्निषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्धमिन्दी
वरोदरसहोदरमिन्दिरायाः ॥ ३ ॥

आमीलिताक्षमधिगम्य मुदा मुकुन्दम्
आनन्दकन्दमनिमेषमनङ्गतन्त्रम् ।
आकेकरस्थितकनीनिकपक्ष्मनेत्रं भूत्यै
भवेन्मम भुजङ्गशयाङ्गनायाः ॥ ४ ॥

बाह्वन्तरे मधुजितः श्रितकौस्तुभे
या हारावलीव हरिनीलमयी विभाति।
कामप्रदा भगवतोऽपि कटाक्षमाला
कल्याणमावहतु मे कमलालयायाः ॥ ५ ॥

कालाम्बुदालिललितोरसि कैटभारेर्धाराधरे
स्फुरति या तडिदङ्गनेव।
मातुः समस्तजगतां महनीयमूर्तिर्भद्राणि
मे दिशतु भार्गवनन्दनायाः ॥ ६ ॥

प्राप्तं पदं प्रथमतः किल यत्प्रभावान्
माङ्गल्यभाजि मधुमाथिनि मन्मथेन।
मय्यापतेत्तदिह मन्थरमीक्षणार्धं
मन्दालसं च मकरालयकन्यकायाः ॥ ७ ॥

दद्याद्दयानुपवनो द्रविणाम्बुधाराम्
अस्मिन्नकिञ्चनविहङ्गशिशौ विषण्णे।
दुष्कर्मघर्ममपनीय चिराय दूरं
नारायणप्रणयिनीनयनाम्बुवाहः ॥८॥
इष्टा विशिष्टमतयोऽपि यया दयार्द्रदृष्ट्या
त्रिविष्टपपदं सुलभं लभन्ते।
दृष्टिः प्रहृष्टकमलोदरदीप्तिरिष्टां पुष्टिं
कृषीष्ट मम पुष्करविष्टरायाः ॥९॥
गीर्देवतेति गरुडध्वजसुन्दरीति
शाकम्भरीति शशिशेखरवल्लभेति।
सृष्टिस्थितिप्रलयकेलिषु संस्थितायै
तस्यै नमस्त्रिभुवनैकगुरोस्तरुण्यै ॥१०॥
श्रुत्यै नमोऽस्तु शुभकर्मफलप्रसूत्यै
रत्यै नमोऽस्तु रमणीयगुणार्णवायै।
शक्त्यै नमोऽस्तु शतपत्रनिकेतनायै पुष्ट्यै
नमोऽस्तु पुरुषोत्तमवल्लभायै ॥११॥
नमोऽस्तु नालीकनिभाननायै
नमोऽस्तु दुग्धोदधिजन्मभूत्यै।
नमोऽस्तु सोमामृतसोदरायै
नमोऽस्तु नारायणवल्लभायै ॥१२॥
सम्पत्कराणि सकलेन्द्रियनन्दनानि
साम्राज्यदानविभवानि सरोरुहाक्षि।
त्वद्वन्दनानि दुरिताहरणोद्यतानि मामेव
मातरनिशं कलयन्तु मान्ये ॥१३॥

यत्कटाक्षसमुपासना विधिः
सेवकस्य सकलार्थसम्पदः।
संतनोति वचनाङ्गमानसैस्त्वां
मुरारिहृदयेश्वरीं भजे॥ १४॥

सरसिजनिलये सरोजहस्ते
धवलतमांशुकगन्धमाल्यशोभे।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे
त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम्॥ १५॥

दिग्घस्तिभिः कनककुम्भमुखावसृष्ट
स्वर्वाहिनीविमलचारुजलप्लुताङ्गीम्।
प्रातर्नमामि जगतां जननीमशेष
लोकाधिनाथगृहिणीममृताब्धिपुत्रीम्॥ १६॥

कमले कमलाक्षवल्लभे त्वं
करुणापूरतरङ्गितैरपाङ्गैः।
अवलोकय मामकिञ्चनानां
प्रथमं पात्रमकृत्रिमं दयायाः॥ १७॥

स्तुवन्ति ये स्तुतिभिरमूभिरन्वहं
त्रयीमयीं त्रिभुवनमातरं रमाम्।
गुणाधिका गुरुतरभाग्यभागिनो
भवन्ति ते भुवि बुधभाविताशयाः॥ १८॥

लक्ष्मी स्तोत्र

जय पद्मपलाशाक्षि जय त्वं श्रीपतिप्रिये।
जय मातर्महालक्ष्मि संसारार्णवतारिणी॥ १ ॥
महालक्ष्मि नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं सुरेश्वरि।
हरिप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे॥ २ ॥
पद्मालये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं च सर्वदे।
सर्वभूतहितार्थाय वसुवृष्टिं सदा कुरु॥ ३ ॥
जगन्मातर्नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे।
दयावति नमस्तुभ्यं विश्वेश्वरि नमोऽस्तु ते॥ ४ ॥
नमः क्षीरार्णवसुते नमस्त्रैलोक्याधारिणी।
वसुवृष्टे नमस्तुभ्यं रक्ष मां शरणागतम्॥ ५ ॥
रक्ष त्वं देवदेवेशि देवदेवस्य वल्लभे।
दरिद्रात्त्राहि मां लक्ष्मि कृपां कुरु ममोपरि॥ ६ ॥
नमस्त्रैलोक्यजननि नमस्त्रैलोक्यपावनि।
ब्रह्मादयो नमस्ते त्वां जगदानन्ददायिनी॥ ७ ॥

विष्णु प्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं जगद्धिते।
आर्तिहन्त्रि नमस्तुभ्यं समृद्धि कुरु मे सदा ॥ ८ ॥
अब्जवासे नमस्तुभ्यं चपलायै नमो नमः।
चञ्चलायै नमस्तुभ्यं ललितायै नमो नमः ॥ ९ ॥
नमः प्रद्युम्नजननि मातस्तुभ्यं नमो नमः।
परिपालय भो मातर्मां तुभ्यं शरणागतम् ॥ १० ॥
शरण्ये त्वां प्रपन्नोऽस्मि कमले कमलालये।
त्राहि त्राहि महालक्ष्मि परित्राणपरायणे ॥ ११ ॥
पाण्डित्यं शोभते नैव न शोभन्ति गुणा नरे।
शीलत्वं नैव शोभते महालक्ष्मि त्वया बिना ॥ १२ ॥
तावद्विराजते रूपं तावच्छीलं विराजते।
तावद्गुणा नराणां यावल्लक्ष्मीः प्रसीदति ॥ १३ ॥
लक्ष्मित्वयालंकृतमानवा ये पापैर्विमुक्ता नृपलोकमान्याः।
गुणैर्विहीना गुणिनो भवन्ति दुःशीलिनः शीलवतां वरिष्ठाः ॥ १४ ॥
लक्ष्मीर्भूषयते रूपं लक्ष्मीर्भूषयते कुलम्।
लक्ष्मीर्भूषयते विद्यां सर्वाल्लक्ष्मीर्विशिष्यते ॥ १५ ॥
लक्ष्मि त्वद्गुणकीर्तनेन कमलाभूर्यात्यलं जिह्मतां।
रुद्राद्या रविचन्द्रदेवपतयो वक्तुं च नैव क्षमाः।
अस्माभिस्तव रूपलक्षणगुणान्वक्तुं कथं शक्यते।
मातर्मां परिपाहि विश्वजननि कृत्वा ममेष्टं ध्रुवम् ॥ १६ ॥
दीनार्तिभीतं भवतापपीडितं धनैर्विहीन तव पार्श्वमागतम्।
कृपानिधित्वान्मम लक्ष्मि सत्वरं धनप्रदानाद्धननायकं कुरु ॥ १७ ॥
मां विलोक्य जननि हरिप्रिये निर्धनं तव समीपमागतम्।
देहि मे झटिति लक्ष्मि कराग्रं वस्त्रकाञ्चनवरान्नमद्भुतम् ॥ १८ ॥

त्वमेव जननी लक्ष्मि पिता लक्ष्मि त्वमेव च॥१९॥
त्राहि त्राहि महालक्ष्मि त्राहि त्राहि सुरेश्वरि।
त्राहि त्राहि जगन्मातर्दरिद्रात्त्राहि वेगतः॥२०॥
नमस्तुभ्यंजगद्धात्रि नमस्तुभ्यं नमो नमः।
धर्माधारे नमस्तुभ्यं नमः सम्पत्तिदायिनी॥२१॥
दरिद्रार्णवमग्नोऽहं निमग्नोऽहं रसातले।
मज्जन्तं मां करे धृत्वा सूद्धर त्वं रमे द्रुतम्॥२२॥
किं लक्ष्मि बहुनोक्तेन जल्पितेन पुनः पुनः।
अन्यन्मे शरणं नास्ति सत्यं सत्यं हरिप्रिये॥२३॥
एतच्छ्रुत्वाऽगस्तिवाक्यं हृष्यमाणा हरिप्रिया।
उवाच मधुरां वाणीं तुष्टाहं तव सर्वदा॥२४॥

लक्ष्मी उवाच

यत्त्वयोक्तमिदं स्तोत्रं यः पठिष्यति मानवः।
श्रृणोति च महाभागस्तस्याहं वशवर्तिनी॥२५॥
नित्यं पठति यो भक्त्या त्वलक्ष्मीस्तस्य नश्यति।
रणश्च नश्यते तीव्रं वियोगं नैव पश्यति॥२६॥
यः पठेत्प्रातरुत्थाय श्रद्धा-भक्तिसमन्वितः।
गृहे तस्य सदा स्थास्ये नित्यं श्रीपतिना सह॥२७॥
सुखसौभाग्यसम्पन्नो मनस्वी बुद्धिमान् भवेत्।
पुत्रवान् गुणवान् श्रेष्ठो भोगभोक्ता च मानवः॥२८॥
इदं स्तोत्रं महापुण्यं लक्ष्म्यगस्तिप्रकीर्तितम्।
विष्णुप्रसादजननं चतुर्वर्गफलप्रदम्॥२९॥
राजद्वारे जयश्चैव शत्रोश्चैव पराजयः।
भूतप्रेतपिशाचानां व्याघ्राणां न भयं तथा॥३०॥

न शस्त्रानलतोयौघाद्भयं तस्य प्रजायते।
दुर्वृत्तानां च पापानां बहुहानिकरं परम्॥ ३१॥
मन्दुराकरिशालासु गवां गोष्ठे समाहितः।
पठेत्तद्दोषशान्त्यर्थं महापातकनाशनम्॥ ३२॥
सर्वसौख्यकरं नृणामायुरारोग्यदं तथा।
अगतिमुनिना प्रोक्तं प्रजानां हितकाम्यया॥ ३३॥

श्री हनुमल्लांगूलास्त्र स्तोत्र

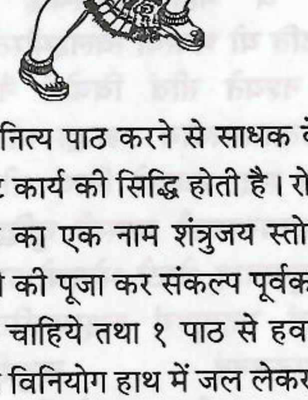

इस स्तोत्र का नित्य पाठ करने से साधक के विरोधी दुश्मन दब जाते हैं तथा इष्ट कार्य की सिद्धि होती है। रोग आदि खत्म हो जाता है। इस स्तोत्र का एक नाम शत्रुंजय स्तोत्र भी है। इसको विधिवत हनुमान जी की पूजा कर संकल्प पूर्वक इष्ट कार्य सिद्धि हेतु ११ पाठ करना चाहिये तथा १ पाठ से हवन करना चाहिए। सर्वप्रथम निम्नांकित विनियोग हाथ में जल लेकर करना चाहिये—

ओं अस्य श्री हनुमल्लांगूल शत्रुन्जय स्तोत्र मन्त्रस्य ईश्वर

ऋषिः अनुष्टुप छन्दः श्री हनुमान रूद्रो देवता हं बीजं स्वाहा शक्तिः, हा हा हा इति कीलकम् मम् सर्वारक्षयार्थे जपे विनियोगः।
करन्यास—ओं ह्रां आंजनेयाय अंगुष्ठाभ्यां नमः,
ओं ह्रीं रामदूताय तर्जनीभ्यां नमः,
ओं ह्रं अक्षयकुमार विध्वंसकाय मध्यमाभ्यां नमः।
ओं ह्रैं लंकाविदाहकाय अनामिकाभ्यां नमः,
ओं ह्रौं रूद्रावताराय कनिष्ठकाभ्यां नमः।
ओं ह्रः सकलरिपु संहारणाय करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः,
ओं ह्रां आंजनेयाय हृदयाय नमः।
ओं ह्रीं रामदूताय शिरसे स्वाहा,
ओं ह्रं अक्षयकुमार विध्वंसकाय शिखायै वषट्।
ओं ह्रैं लंकाविदाहकाय कवचाय हुम्,
ओं ह्रौं रूद्रावताराय नेत्राभ्यां वौषट्।
ओं ह्रः सकलरिपु संहारणाय अस्त्राय फट्,
ओं ऐं श्रौं ह्राँ ह्रीं ह्रूं ह्रौं हस्फ्रें खफ्रें,
हस्त्रौं हस्ख्फ्रें ह्सौं नमो हनुमते।
त्रैलोभ्याक्रमण पराक्रम श्रीराम भक्त मम परस्य च,
सर्व शत्रुन् चतुर्वर्ण सम्भवान पुंस्त्रीनपुंसकान।
भूत भविष्यद् वतथानान् दूरस्थान,
पुंस्त्रीनपुंसकान् भूत भविष्यद् वर्तभानान् दूरस्थान।
समीपस्थान् नाना नामधेयान् नाना संकट जातीयान्-
कलत्रपुत्रमित्रमृत्य बन्धु सुहृत्समेतान्,
प्रभुशक्ति सहितान् धन-धान्यादि संपत्तियुतान्।
राज्ञो राजसेवकान् मंत्रि सचि सखीना त्यन्तिकान्,

क्षणेन त्वष्टया एतद् दिनावधि नानोपायर मारय-मारय
अस्त्रैः छेदय छेदय अग्निना ज्वालय ज्वालय दाहय दाहय,
अक्षयकुमारवत् पादतलाक्रमणेन आत्रोटय आत्रोटय।
घातय घातय भक्तजनवत्सल सीता-थोक पहारक,
सर्वत्र मामेन च रक्ष रक्ष हा हा हा हुं हुं हुं।
भूत संघै सह भक्षय भक्षय क्रुद्ध चेतसा,
नखैर्विदारय विदारद दाशादश्मादू उच्चाटाय उच्चाटाय।
पिशाचवद् भ्रंशय भ्रंशय, घे घे घे हुं हुं हुं फट् स्वाहा।
ओं नमो भगवते श्री हनुमते महाबल पराक्रमाय,
महाविपत्ति निवारणाय भक्त-जन मनः सकल्पनाय।
कल्पद्रुमाय दुष्टजन मनोरथः स्तम्भनाय,
प्रभंजन प्राणप्रियाय स्वाहा।

अथ ध्यानम्

श्रीमन्तं हनुमन्तमान्त रिपुमिद् भूमृत्तनुभ्राजितं,
बाल्याद्-बालधिबद्धवैरिनिचयं चामिकटाद्रिप्रभम्।
रोषारक्त-पिशंगः नेत्र-नलिनं भ्रूमंगमंग-स्फुटत्,
प्रौद्यच्चण्ड-मयूख-मण्डल मुखं दुःखापहं दुःखिनाम्॥ १॥
कौपीनं कटिसूत्र-मौज्यजिन युग्देहं विदेहात्मजा,
प्राणाधीशयदारविन्द निहतं स्वान्तं कृतान्तं द्विषाम्।
ध्यात्वैवं समरांगणे स्थितमकानीय स्वहत्पंकजे,
सम्पूज्याखिल पूजनोक्तविधिना सम्प्रार्थयेत्प्रार्थितम्॥ २॥
ओं हनुमन् अन्जनीसूनो महाबलपराक्रम्,
लोललांगूलपातेन ममारातीन् निपातय॥ ३॥

अक्षक्षपण पिंगाक्षदितिजासुक्षयङ्कर,
लोललांगूलपातेन ममारातीन् निपातय॥४॥
मर्कटाधिप मार्तण्डमण्डलग्रासकारक,
लोललांगूलपातेन ममारातीन् निपातय॥५॥
रूद्रावतार संसारदुःखभारापहारक,
लोललांगूलपातेन ममारातीन् निपातय॥६॥
श्रीरामरचणाम्भोज मधुपापितमानस,
लाललांगूलपातेन ममारातीन् निपातय॥७॥
बालिकाल कोटदक्रान्त सुग्रीवोन्मोचन प्रभो,
लोललांगूलपातेन् ममारातीन् निपातय॥८॥
सीता विरह वारीशम् अग्नि सीते शतारक,
लोललांगूलपातेन् ममारातीन् निपातय॥९॥
रक्षोराज प्रजापाग्नि दहयमान जगद्धित,
लोललांगूलपातेन ममारातीन् निपातय॥१०॥
ग्रस्ताशेष जगत्स्वास्थ राक्षसाम्भोधिमन्दर,
लोललांगूलपातेन ममारातीन् निपातय॥११॥
पुच्छगुच्छ स्फुप्द्धूम ध्वजदग्ध निकेतन,
लोललांगूलपातेन् ममारातीन् निपातय॥१२॥
जगन्मनोदुरूल्लंघ्य पारावार विलंघन,
लोललांगूलपातेन् ममारातीन् निपातय॥१३॥
स्मृति मात्र समस्तेष्टपूरणा! प्रणतप्रिय,
लोललांगूलपातेन् ममारातीन् निपातय॥१४॥

रात्रिचरचभूराशि कर्त्तनैक विकतेन,
लोललांगूलपातेन् ममारातीन् निपातय॥१५॥
जानकी जानकी जानी प्रेम पात्र परन्तप,
लोललांगूलपातेन् ममारातीन् निपाताय॥१६॥
भीमादिक महावीर वीरवेशादितारक,
लोललांगूलपातेन् ममारातीन् निपातय॥१७॥
वैदेहि विरहाक्रान्तं रामरोषं कविग्रह,
लोललांगूलपातेन् ममारातीन् निपातय॥१८॥
वज्रांगनखदंष्ट्रेश वज्रिवज्रावकुण्ठन्,
लोललांगूलपातेन् ममारातीन् निपातय॥१९॥
अखर्व गर्व गन्धर्व पर्वतोद्‌भेदनेश्वर,
लोललांगूलपातेन् ममारातीन् निपातय॥२०॥
लक्ष्मण प्राण संस्त्राणं त्रात: तीक्ष्णकरान्वय,
लोललांगूलपातेन् ममारातीन् निपातय॥२१॥
रामादि विप्रयोगार्त भरताद्यार्तिनाशन,
लोललांगूलपातेन् ममारातीन् निपातय॥२२॥
द्रोणाचल सुभत्क्षेय समुत् क्षिप्तारिभैव,
लोललांगूलपातेन ममारातीन् निपातय॥२३॥
सीताशीर्वाद सम्पन्न समस्ताभ्यवांछित,
लोललांगूलपातेन् ममारातीन् निपातय॥२४॥
वात पित्त कफ श्वास ज्वरादि व्याधिनाशन,
लोललांगूलपातेन् ममारातीन् निपातय॥२५॥
ओं इत्येवमश्वतथतलोपविष्ट: शत्रुंजयं नाम पठेत्स्तवं य:,
स शीघ्रमेवास्तसमस्त शत्रु, प्रमोदत्ते मरूतज प्रसीदात्॥२६॥

कवच पाठ

नृसिंह कवच

अभिचार प्रयोगों से बचने के लिये गजेन्द्र मोक्ष का प्रयोग सम्पुटित शतचंडी, प्रत्यंगिरा और नृसिंह कवच का प्रयोग किया जाता है। अगर कोई अभिचार प्रयोग के चपेट में आ जाए उनकी रक्षा भी नृसिंह कवच से होती है। इसे नीचे दिया जा रहा है।

किसी भी माह की शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी तिथि के दिन शुभ नक्षत्र रहने पर तथा शुभ योग रहने पर गुरु एवं शुक्रोदय काल में इस स्तोत्र को भोजपत्र पर या सादे कागज पर लिख कर अष्टगंध से अनार के कलम से लिखकर षोडशोपचार से पूजा

कर दें। साथ ही कवच पर ध्यान लगाकर १०८ बार पाठ कर दें। इस स्तोत्र के प्रत्येक मन्त्र से घी का हवन ११ बार कर दें। तत्पश्चात् सोना, चाँदी या ताँबा की ताबीज में स्तोत्र को भरकर गले या दाहिने हाथ में धारण करें, मन्त्र काला सूत्र में पहनें। इससे सब प्रकार की पराकृत व्याधि जाती रहती है। दुष्टों के द्वारा किया हुआ अभिचार कर्म समाप्त होकर व्यक्ति निरोग हो जाता है।

नारद उवाच

इन्द्राणि देव सन्देश इड्येश्वर जगत्पते,
महाविष्णु नृसिंह कवचं ब्रुहि मे प्रभो।
यस्य प्रपठनात् विद्वान् त्रैलोक्ये विजयी भवेत्।

ब्रह्मा उवाच

श्रणु नारद वक्ष्यामि पुत्रश्रेष्ठ तपोधन।
कवच नरसिंहस्य त्रैलोक्ये विजयी भवेत्॥
स्त्रष्टाहं जगता वत्स पठनात् धारणात् यतः।
लक्ष्मी जगत् क्रयं पाति संहर्त्ता च महेश्वरः॥
पठनात् धारणात् देवाः वणवश्च दिगोश्वरः।
ब्रह्ममन्त्रमयं वक्ष्ये भ्रान्त्यादि विनिवारकम्॥
यस्य प्रसादात् दुर्वासः त्रैलोक्य विजयी भवेत्।
पठनात् धारणात् यस्य शास्त्रा च क्रोध भैरवः॥
त्रैलोक्ये विजयस्यापि कवचस्य प्रजापतिः।
ऋषिः छन्दस्तु गायत्री नृसिंहो देवता विभुः॥

क्षौं बीजं मे सिरः पातु चन्द्रवर्णी महामनुः।
ओं उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्॥
नृसिंह भीषणं मृत्युमृत्यु नमाम्यहम्।
द्वात्रिंशद अक्षरो मंत्रो मंत्रराजः सुरद्रुमः॥
कंठं पातु ध्रुवं श्रीं हृद् भगवते चक्षुषि मम्।
नरसिंहाय च ज्वाला मालिने पातु कर्णकम्॥
दीप दृष्ट्राय च तथा अग्निनेत्राय नासिकाम्।
सर्व रक्षोहनाय च तथा सर्वभूत हिताय च॥
सर्व ज्वर विनाशाय दह दह पदद्वयम्।
रक्ष रक्ष वक्रमन्त्रः स्वाहा पातुं मुखं मम॥
तारादि रामचन्द्राय नमः पातु हृद मम।
क्लीं प्रायात्पार्श्वयुग्मं च तारो नमः पदं ततः॥
नारायणाय नाभिं च आं ह्रीं क्रों श्रों च हुंम् फट्।
षडक्षरः कटि पातु ओं नमो भगवते पदम्॥
वासुदेवाय च पृष्ठं क्लीं कृष्णाय क्लीं उरूद्वयम्।
क्लीं कृष्णाय सदा पातु जानुनी च मनुत्तमः॥
क्लीं क्लीं क्लीं श्यामलांगाय नमः पायात्पद।
क्षौं नृसिंहाय क्षों च सर्वांगे मे सदावतु॥
इति तै कथितं वत्स सर्व मन्त्रोद्य विग्रहम्।
तव स्नेहान्मयाख्यातं प्रवक्तव्यं न कष्यचित्।
गुरूपूजां विधायाश गृहणीयात् कवचं ततः॥

श्री नारायण कवच

न्यास

सर्वप्रथम श्रीगणेशजी तथा भगवान् नारायण को नमस्कार करके नीचे लिखे प्रकार से न्यास करे—

अङ्गन्यासः

ॐ ॐ नमः—पादयोः (दाहिने हाथ की तर्जनी-अंगुष्ठ इन दोनों को मिलाकर दोनों पैरों का स्पर्श करें)।

ॐ नं नमः—जानुनोः (दाहिने हाथ की तर्जनी-अंगुष्ठ इन दोनों को मिलाकर दोनों घुटनों का स्पर्श करे)।

ॐ मों नमः—ऊर्वोः (दाहिने हाथ की तर्जनी-अंगुष्ठ इन दोनों को मिलाकर दोनों पैरों की जाँघ का स्पर्श करें।

ॐ नां नमः—उदरे (दाहिने हाथ की तर्जनी-अंगुष्ठ इन दोनों को मिलाकर पेट का स्पर्श करे)।

ॐ रां नमः—हृदि (मध्यमा-अनामिका-तर्जनी से हृदय का स्पर्श करे)।

ॐ यं नमः—उरसि (मध्यमा-अनामिका-तर्जनी से छाती का स्पर्श करे)।

ॐ णां नमः—मुखे (तर्जनी-अँगूठे के संयोग से मुख का स्पर्श करे)।

ॐ यं नमः—शिरसि (तर्जनी-मध्यमा के संयोग से सिर का स्पर्श करे)।

करन्यासः

ॐ ॐ नमः—दक्षिणतर्जन्याम् (दाहिने अँगूठे से दाहिनी तर्जनी के सिरे का स्पर्श करे)।

ॐ नं नमः—दक्षिणमध्यमायाम् (दाहिने अँगूठे से दाहिने हाथ की मध्यमा अँगुली का ऊपर वाला पोर स्पर्श करे)।

ॐ मों नमः—दक्षिणानामिकायाम् (दाहिने अँगूठे से दाहिने हाथ की अनामिका का ऊपर वाला पोर स्पर्श करे)।

ॐ भं नमः—दक्षिणकनिष्ठिकायाम् (दाहिने अँगूठे से दाहिने हाथ की कनिष्ठिका का ऊपर वाला पोर स्पर्श करे)।

ॐ गं नमः—वामकनिष्ठिकायाम् (बायें अँगूठे से बायें हाथ की कनिष्ठिका का ऊपर वाला पोर स्पर्श करे)।

ॐ वं नमः—वामानामिकायाम् (बायें अँगूठे से बायें हाथ की अनामिका का ऊपर वाला पोर स्पर्श करे)।

ॐ तें नमः—वाममध्यमायाम् (बायें अँगूठे से बायें हाथ की मध्यमा का ऊपर वाला पोर स्पर्श करे)।

ॐ वां नमः—**वामतर्जन्याम्** (बायें अँगूठे से बायें हाथ की तर्जनी का ऊपर वाला पोर स्पर्श करे)।

ॐ सुं नमः—**दक्षिणाङ्गुष्ठोर्ध्वपर्वणि** (दाहिने हाथ की चारों अँगुलियों से दाहिने हाथ के अँगूठे का ऊपर वाला पोर स्पर्श करे)।

ॐ दें नमः—**दक्षिणाङ्गुष्ठाधः पर्वणि** (दाहिने हाथ की चारों अँगुलियों से दाहिने हाथ के अँगूठे का नीचे वाला पोर स्पर्श करे)।

ॐ वां नमः—**वामाङ्गुष्ठोर्ध्वपर्वणि** (बायें हाथ की चारों अँगुलियों से बायें अँगूठे के ऊपर वाला पोर स्पर्श करे)।

ॐ यं नमः—**वामाङ्गुष्ठाधः पर्वणि** (बायें हाथ की चारों अँगुलियों से बायें हाथ के अँगूठे का नीचे वाला पोर स्पर्श करे)।

विष्णुषडक्षरन्यासः

ॐ ॐ नमः—**हृदये** (तर्जनी-मध्यमा एवं अनामिका से हृदय का स्पर्श करे)।

ॐ विं नमः—**मूर्धिनि** (तर्जनी-मध्यमा के संयोग से सिर का स्पर्श करे)।

ॐ षं नमः—**भ्रुवोर्मध्ये** (तर्जनी-मध्यमा से दोनों भौंहों का स्पर्श करे)।

ॐ णं नमः—**शिखायाम्** (अँगूठे से शिखा का स्पर्श करे)।

ॐ वें नमः—**नेत्रयोः** (तर्जनी-मध्यमा से दोनों नेत्रों का स्पर्श करे)।

ॐ नं नमः—**सर्वसंधिषु** (तर्जनी-मध्यमा और अनामिका से

शरीर के सभी जोड़ों जैसे—कंधा, केहुनी, घुटना आदि का स्पर्श करे)।

ॐ मः अस्त्राय फट्—प्राच्याम् (पूर्व की ओर चुटकी बजाये)।

ॐ मः अस्त्राय फट्—आग्नेय्याम् (अग्निकोण में चुटकी बजाये)।

ॐ मः अस्त्राय फट्—दक्षिणस्याम् (दक्षिण की ओर चुटकी बजाये)।

ॐ मः अस्त्राय फट्—नैर्ऋत्ये (नर्ऋत्यकोण में चुटकी बजाये)।

ॐ मः अस्त्राय फट्—प्रतीच्याम् (पश्चिम की ओर चुटकी बजाये)।

ॐ मः अस्त्राय फट्—वायव्ये (वायुकोण में चुटकी बजाये)।

ॐ मः अस्त्राय फट्—उदीच्याम् (उत्तर की ओर चुटकी बजाये)।

ॐ मः अस्त्राय फट्—ऐशान्याम् (ईशानकोण में चुटकी बजाये)।

ॐ मः अस्त्राय फट्—ऊर्ध्वायाम् (ऊपर की ओर चुटकी बजाये)।

ॐ अस्त्राय फट्—अधरायाम् (नीचे की ओर चुटकी बजाये)।

श्री नारायण कवच प्रारम्भ

राजोवाच

यया गुप्तः सहस्राक्षः सवाहान् रिपुसैनिकान्।
क्रीडन्निव विनिर्जित्य त्रिलोक्या बुभुजे श्रियम्॥१॥
भगवंस्तन्ममाख्याहि वर्म नारायणात्मकम्।
यथाऽऽततायिनः शत्रून् येन गुप्तोऽजयन्मृधे॥ २॥

राजा परीक्षित ने पूछा—भगवन्! देवराज इन्द्र ने जिससे

सुरक्षित होकर शत्रुओं की चतुरंगिणी सेना को खेल-खेल में अनायास ही जीतकर त्रिलोकी की राजलक्ष्मी का उपभोग किया, आप उस नारायणकवच को मुझे सुनाइये और यह भी बतलाइये कि उन्होंने उससे सुरक्षित होकर रणभूमि में किस प्रकार आक्रमणकारी शत्रुओं पर विजय प्राप्त की।

श्री शुक उवाच

वृतः पुरोहितस्त्वाष्ट्रो महेन्द्रायानुपृच्छते।
नारायणाख्यं वर्माह तदिहैकमनाः शृणु॥ ३॥

श्रीशुकदेवजी ने कहा—परीक्षित्! जब देवताओं ने विश्वरूप को पुरोहित बना लिया, तब देवराज इन्द्र के प्रश्न करने पर विश्वरूप ने उन्हें नारायणकवच का उपदेश किया। तुम एकाग्रचित्त से उसका श्रवण करो।

विश्वरूप उवाच

धौताङ्घ्रिपाणिराचम्य सपवित्र उदङ्मुखः।
कृतस्वाङ्गकरन्यासो मन्त्राभ्यां वाग्यतः शुचिः॥ ४॥
नारायणमयं वर्म संनह्येद् भय आगते।
पादयोर्जानुनोरूर्वोरूदरे हृद्यथोरसि॥ ५॥
मुख शिरस्यानुपूर्व्यादोंकारादीनि विन्यसेत्।
ॐ नमो नारायणायेति विपर्ययमथापि वा॥ ६॥

विश्वरूप ने कहा—देवराज इन्द्र! भय का अवसर उपस्थित होने पर नारायणकवच धारण करके अपने शरीर की रक्षा कर लेनी चाहिये। उसकी विधि यह है कि पहले हाथ-पैर धोकर आचमन करे, फिर हाथ में कुश की पवित्री धारण करके उत्तर

मुँह बैठ जाय। इसके बाद कवच धारण पर्यन्त और कुछ न बोलने का निश्चय करके पवित्रता से 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' इन मन्त्रों के द्वारा हृदयादि अंगन्यास तथा अंगुष्ठादि कर न्यास करे। पहले 'ॐ नमो नारायणाय' इस अष्टाक्षर मन्त्र के ॐ आदि आठ अक्षरों का क्रमशः पैरों, घुटनों, जाँघों, पेट, हृदय, वक्षःस्थल, मुख और सिर में न्यास करें। अथवा पूर्वोक्त मन्त्र के यकार से लेकर ॐकार पर्यन्त आठ अक्षरों का सिर से आरम्भ करके उन्हीं आठ अंगों में विपरीत क्रम से न्यास करें।

करन्यासं ततः कुर्याद् द्वादशाक्षरविद्यया।
प्रणवादियकारान्तमङ्गुल्यङ्गुष्ठपर्वसु ॥ ७ ॥

तदनन्तर 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' इस द्वादशाक्षर मन्त्र के ॐ आदि बारह अक्षरों का दायीं तर्जनी से बायीं तर्जनी तक दोनों हाथ की आठ अँगुलियों और दोनों अँगूठों की दो-दो गाँठों में न्यास करें।

न्यसेद्धृदय ओङ्कारं विकारमनु मूर्धनि।
षकारं तु भ्रुवोर्मध्ये णकारं शिखया दिशेत्॥ ८ ॥
वेकारं नेत्रयोर्युञ्ज्यान्नकारं सर्वसंधिषु।
मकारमस्त्रमुद्दिश्य मन्त्रमूर्तिर्भवेद् बुधः॥ ९ ॥
सविसर्गं फडन्तं तत् सर्वदिक्षु विनिर्दिशेत्।
ॐ विष्णवे नम इति॥ १० ॥

फिर 'ॐ विष्णवे नमः' इस मन्त्र के पहले अक्षर 'ॐ' का हृदय में, 'वि' का ब्रह्मरन्ध्र में, 'ष' का भौहों के बीच में, 'ण' का चोटी में 'वे' का दोनों नेत्रों में और 'न' का शरीर की सब गाँठों

में न्यास करे। तदनन्तर 'ॐ मः अस्त्राय फट्' कहकर दिग्बन्ध करे। इस प्रकार न्यास करने से इस विधि को जानने वाला पुरुष मन्त्र स्वरूप हो जाता है।

आत्मानं परमं ध्यायेद् ध्येयं षट्शक्तिभिर्युतम्।
विद्यातेजस्तपोमूर्तिमिमं मन्त्रमुदाहरेत्॥ ११॥

इसके बाद समग्र ऐश्वर्य, धर्म, यश, लक्ष्मी, ज्ञान और वैराग्य से परिपूर्ण इष्टदेव भगवान का ध्यान करे और अपने को भी तद्रूप ही चिन्तन करे। तत्पश्चात् विद्या, तेज और तप स्वरूप इस कवच का पाठ करे।

ॐ हरिर्विदध्यान्मम सर्वरक्षां न्यस्ताङ्घ्रिपद्मः पतगेन्द्रपृष्ठे।
दरारिचर्मासिगदेषुचापपाशान् दधानोऽष्टगुणोऽष्टबाहुः॥ १२॥

भगवान् श्रीहरि गरूड़जी की पीठ पर अपने चरण-कमल रखे हुए हैं। अणिमादि आठों सिद्धियाँ उनकी सेवा कर रही हैं। आठ हाथों में शंख, चक्र, ढाल, तलवार, गदा, बाण, धनुष और पाश (फंदा) धारण किये हुए हैं। वे ही ॐकार स्वरूप प्रभु सब प्रकार से सब ओर से मेरी रक्षा करें।

जलेषु मां रक्षतु मत्स्यमूर्तिर्यादोगणेभ्यो वरूणस्य पाशात्।
स्थलेषु मायावटुवामनोऽव्यात् त्रिविक्रमः खेऽवतु विश्वरूपः॥ १३॥

मत्स्यमूर्ति भगवान् जल के भीतर जल जन्तुओं से और वरूण के पाश से मेरी रक्षा करें। माया से ब्रह्मचारी का रूप धारण करने वाले वामन भगवान स्थल पर और विश्व रूप श्रीत्रिविक्रम भगवान् आकाश में मेरी रक्षा करें।

दुर्गेष्वटव्याजिमुखादिषु प्रभुः पायान्नृसिंहोऽसुरयूथपारिः।
विमुञ्चतो यस्य महाट्टहासं दिशो विनेदुर्न्यपतंश्च गर्भाः॥ १४॥

जिनके घोर अट्टहास करने पर सब दिशाएँ गूँज उठी थीं और गर्भवती दैत्य-पत्नियों के गर्भ गिर गये थे, वे दैत्ययूथपतियों के शत्रु भगवान नृसिंह किले, जंगल, रणभूमि आदि विकट स्थानों में मेरी रक्षा करें।

रक्षत्वसौ माध्वनि यज्ञकल्पः स्वदंष्ट्रयोन्नीतधरो वराहः।
रामोऽद्रिकूटेष्वथ विप्रवासे सलक्ष्मणोऽव्याद् भरताग्रजोऽस्मान्॥ १५॥

अपनी दाढ़ों पर पृथ्वी को उठा लेनेवाले यज्ञमूर्ति वराहभगवान् मार्ग में, परशुरामजी पर्वतों के शिखरों पर और लक्ष्मणजी के सहित भरत के बड़े भाई भगवान् रामचन्द्र प्रवास के समय मेरी रक्षा करें।

मामुग्रधर्मादखिलात् प्रमादान्नारायणः पातु नरश्च हासात्।
दत्तस्त्वयोगादथ योगनाथः
पायाद् गुणेशः कपिलः कर्मबन्धात्॥ १६॥

भगवान नारायण मारण-मोहन आदि भयंकर अभिचारों और सब प्रकार के प्रमादों से मेरी रक्षा करें। ऋषिश्रेष्ठ नर गर्व से, योगेश्वर भगवान दत्तात्रेय योग के विघ्नों से और त्रिगुणाधिपति भगवान कपिल कर्मबन्धनों से मेरी रक्षा करें।

सनत्कुमारोऽवतु कामदेवाद्धयशीर्षा मां पथि देवहेलनात्।
देवर्षिवर्यः पुरुषार्चनान्तरात् कूर्मो हरिर्मां निरयादशेषात्॥ १७॥

परमर्षि सनत्कुमार कामदेव से, हयग्रीव भगवान मार्ग में चलते समय देवमूर्तियों को नमस्कार आदि न करने के अपराध

से, देवर्षि नारद सेवापराधों से और भगवान कच्छप सब प्रकार के नरकों से मेरी रक्षा करें।

धन्वन्तरिर्भगवान् पात्वपथ्याद् द्वन्द्वाद् भयादृषभो निर्जितात्मा।
यज्ञश्च लोकादवताज्जनान्ताद् बलो गणात् क्रोधवशादहीन्द्रः॥ १८॥

भगवान धन्वन्तरि कुपथ्य से, जितेन्द्रिय भगवान ऋषभदेव सुख-दु:ख आदि भयदायक द्वन्द्वों से, यज्ञ भगवान लोकापवाद से, बलरामजी मनुष्यकृत कष्टों से और श्रीशेष जी क्रोध वशनामक सर्पों के गण से मेरी रक्षा करें।

द्वैपायनो भगवानप्रबोधाद् बुद्धस्तु पाखण्डगणात् प्रमादात्।
कल्किः कलेः कालमलात् प्रपातु धर्मावनायोरूकृतावतारः॥ १९॥

भगवान श्रीकृष्णद्वैपायन व्यासजी अज्ञान से तथा बुद्धदेव पाखण्डियों से और प्रमाद से मेरी रक्षा करें। धर्म रक्षा के लिये महान अवतार धारण करने वाले भगवान कल्कि पापबहुल कलिकालके दोषों से मेरी रक्षा करें।

मां केशवो गदया प्रातरव्याद् गोविन्द आसङ्गवमात्तवेणु।
नारायणः प्राह्ण उदात्तशक्तिर्मध्यंदिने विष्णुररीन्द्रपाणिः॥ २०॥

प्रात:काल भगवान केशव अपनी गदा लेकर, कुछ दिन चढ़ जाने पर भगवान गोविन्द अपनी बाँसुरी लेकर, दोपहर के पहले भगवान नारायण अपनी तीक्ष्ण शक्ति लेकर और दोपहर को भगवान विष्णु चक्रराज सुदर्शन लेकर मेरी रक्षा करें।

देवोऽपराह्णे मधुहोग्रधन्वा सायं त्रिधामावतु माधवो माम्।
दोषे हृषीकेश उतार्धरात्रे निशीथ एकोऽवतु पद्मनाभः॥ २१॥

तीसरे पहर में भगवान मधुसूदन अपना प्रचण्ड धनुष लेकर मेरी रक्षा करें। सायंकाल में ब्रह्मा आदि त्रिमूर्तिधारी माधव, सूर्यास्त के बाद हृषीकेश, अर्धरात्रि के पूर्व तथा अर्धरात्रि के समय अकेले भगवान पद्‌भनाभ मेरी रक्षा करें।

श्रीवत्सधामापररात्र ईशः प्रत्यूष ईशोऽसिधरो जनार्दनः।
दामोदरोऽव्यादनुसंध्यं प्रभाते विश्वेश्वरो भगवान् कालमूर्तिः॥ २२॥

रात्रि के पिछले पहर में श्रीवत्सलाञ्छन श्रीहरि, उषाकाल में खड्गधारी भगवान जनार्दन, सूर्योदय से पूर्व श्रीदामोदर और सम्पूर्ण सन्ध्याओं में कालमूर्ति भगवान विश्वेश्वर मेरी रक्षा करें।

चक्रं युगान्तानलतिग्मनेमि भ्रमत् समन्ताद् भगवत्प्रयुक्तम्।
दंदग्धि दंदग्ध्यरिसैन्यमाशु कक्षं यथा वातसखो हुताशः॥ २३॥

सुदर्शन! आपका आकार चक्र (रथ के पहिये) की तरह है। आपके किनारे का भाग प्रलयकालीन अग्नि के समान अत्यन्त-तीव्र है। आप भगवान की प्रेरणा से सब ओर घूमते रहते हैं। जैसे आग वायु की सहायता से सूखे घास-फूस को जला डालती है, वैसे ही आप हमारी शत्रु सेना को शीघ्र-से-शीघ्र जला दीजिये, जला दीजिये।

गदेऽशनिस्पर्शनविस्फुलिङ्गे निष्पिण्ढि निष्पिण्ढ्यजितप्रियासि।
कूष्माण्डवैनायकयक्षरक्षोभूतग्रहांश्चूर्णय चूर्णयारीन्॥ २४॥

कौमौदकी गदा! आपसे छूटने वाली चिनगारियों का स्पर्श वज्र के समान असह्य है। आप भगवान अजित की प्रिया हैं और मैं उनका सेवक हूँ। इसलिये आप कूष्माण्ड, विनायक, यक्ष, राक्षस, भूत और प्रेतादि ग्रहों को अभी कुचल डालिये, कुचल

डालिये तथा मेरे शत्रुओं को चूर-चूर कर दीजिये।

त्वं यातुधानप्रमथप्रेतमातृपिशाचविप्रग्रहघोरदृष्टीन्।
दरेन्द्र विद्रावय कृष्णपूरितो भीमस्वनोऽरेर्हृदयानि कम्पयन्॥ २५॥

शंख श्रेष्ठ! आप भगवान श्रीकृष्ण के फूँकने से भयंकर शब्द करके मेरे शत्रुओं का दिल दहला दीजिये एवं यातुधान, प्रमथ, प्रेत, मातृका, पिशाच तथा ब्रह्मराक्षस आदि भयावने प्राणियों को यहाँ से झटपट भगा दीजिये।

त्वं तिग्मधारासिवरारिसैन्यमीशप्रयुक्तो मम छिन्धि छिन्धि।
चक्षूंषि चर्मञ्छतचन्द्र छादय द्विषामघोनां हर पापचक्षुषाम्॥ २६॥

भगवान की श्रेष्ठ तलवार! आपकी धार बहुत तीक्ष्ण है। आप भगवान की प्रेरणा से मेरे शत्रुओं को छिन्न-भिन्न कर दीजिये। भगवान की प्यारी ढाल! आपमें सैकड़ों चन्द्राकार मण्डल हैं। आप पापदृष्टि पापात्मा शत्रुओं की आँखें बंद कर दीजिये और उन्हें सदा के लिये अन्धा बना दीजिये।

यन्नो भयं ग्रहेभ्योऽभूत् केतुभ्यो नृभ्य एव च।
सरीसृपेभ्यो दंष्ट्रिभ्यो भूतेभ्योंऽहोभ्य एव वा॥ २७॥
सर्वाण्येतानि भगवन्नामरूपास्त्रकीर्तनात्।
प्रयान्तु संक्षयं सद्यो ये नः श्रेयः प्रतीपकाः॥ २८॥

सूर्य आदि ग्रह, धूमकेतु (पुच्छल तारे) आदि केतु, दुष्ट मनुष्य, सर्पादि रेंगने वाले जन्तु दाढ़ों वाले हिंसक पशु, भूत-प्रेत आदि तथा पापी प्राणियों से हमें जो-जो भय हो और जो-जो हमारे मंगल के विरोधी हों वे सभी भगवान के नाम, रूप तथा आयुधों का कीर्तन करने से तत्काल नष्ट हो जायें।

गरूडो भगवान् स्तोत्रस्तोभश्छन्दोमयः प्रभुः।
रक्षत्वशेषकृच्छ्रेभ्यो विष्वक्सेनः स्वनामभिः॥ २९॥

बृहद, रथन्तर आदि सामवेदीय स्तोत्रों से जिनकी स्तुति की जाती है, वे वेदमूर्ति भगवान गरूड़ और विष्वक्सेनजी अपने नामोच्चारण के प्रभाव से हमें सब प्रकार की विपत्तियों से बचायें।

सर्वापद्भ्यो हरेर्नामरूपयानायुधानि नः।
बुद्धीन्द्रियमनः प्राणान् पान्तु पार्षदभूषणाः॥ ३०॥

श्रीहरि के नाम, रूप, वाहन, आयुध और श्रेष्ठ पार्षद हमारी बुद्धि, इन्द्रिय, मन और प्राणों को सब प्रकार की आपत्तियों से बचायें।

यथा हि भगवानेव वस्तुतः सदसच्च यत्।
सत्येनानेन नः सर्वे यान्तु नाशमुपद्रवाः॥ ३१॥

जितना भी कार्य अथवा कारणरूप जगत है, वह वास्तव में भगवान ही हैं—इस सत्य के प्रभाव से हमारे सारे उपद्रव नष्ट हो जायें।

यथैकात्म्यानुभावानां विकल्परहितः स्वयम्।
भूषणायुधलिङ्गाख्या धत्ते शक्तीः स्वमायया॥ ३२॥
तेनैव सत्यमानेन सर्वज्ञो भगवान् हरिः।
पातु सर्वैः स्वरूपैर्नः सदा सर्वत्र सर्वगः॥ ३३॥

जो लोग ब्रह्म और आत्मा की एकता का अनुभव कर चुके हैं, उनकी दृष्टि में भगवान का स्वरूप समस्त विकल्पों भेदों से रहित है, फिर भी वे अपनी माया शक्ति के द्वारा भूषण, आयुध और रूप नामक शक्तियों को धारण करते हैं। यह बात निश्चित

रूप से सत्य है। इस कारण सर्वज्ञ, सर्वव्यापक भगवान श्रीहरि सदा-सर्वत्र सब स्वरूपों से हमारी रक्षा करें।

विदिक्षु दिक्षूर्ध्वमधः समन्तादन्तर्बहिर्भगवान् नारसिंहः।
प्रहापयंल्लोकभयं स्वनेन स्वतेजसा ग्रस्तसमस्ततेजाः॥ ३४॥

जो अपने भयंकर अट्टहास से सब लोगों के भय को भगा देते हैं और अपने तेज से सबका तेज ग्रस लेते हैं, वे भगवान नृसिंह दिशा-विदिशा में, नीचे-ऊपर, बाहर-भीतर सब ओर हमारी रक्षा करें।

मघवन्निदमाख्यातं वर्म नारायणात्मकम्।
विजेष्यस्यञ्जसा येन दंशितोऽसुरयूथपान्॥ ३५॥

देवराज इन्द्र! मैंने तुम्हें यह नारायणकवच सुना दिया। इस कवच से तुम अपने को सुरक्षित कर लो। बस, फिर तुम अनायास ही सब दैत्य-यूथपतियों को जीत लोगे।

एतद् धारयमाणस्तु यं यं पश्यति चक्षुषा।
पदा वा संस्पृशेत् सद्यः साध्वसात् स विमुच्यते॥ ३६॥

इस नारायणकवच को धारण करने वाला पुरुष जिसको भी अपने नेत्रों से देख लेता अथवा पैर से छू देता है, वह तत्काल समस्त भयों से मुक्त हो जाता है।

न कुतश्चिद् भयं तस्य विद्यां धारयतो भवेत्।
राजदस्युग्रहादिभ्यो व्याघ्रादिभ्यश्च कर्हिचित्॥ ३७॥

जो इस वैष्णवी विद्या को धारण कर लेता है, उसे राजा, डाकू, प्रेत, पिशाचादि और बाघ आदि हिंसक जीवों से कभी किसी प्रकार का भय नहीं होता।

इमां विद्यां पुरा कश्चित् कौशिको धारयन् द्विजः।
योगधारणया स्वाङ्गं जहौ स मरूधन्वनि॥ ३८॥

प्राचीन काल की बात है, एक कौशिक गोत्री ब्राह्मण ने इस विद्या को धारण करके योगधारणा से अपना शरीर मरूभूमि में त्याग दिया।

तस्योपरि विमानेन गन्धर्वपतिरेकदा।
ययौ चित्ररथः स्त्रीर्भिर्वृतो यत्र द्विजक्षयः॥ ३९॥

जहाँ उस ब्राह्मण का शरीर पड़ा था, उसके ऊपर से एक दिन गन्धर्वराज चित्ररथ अपनी स्त्रियों के साथ विमान पर बैठकर निकलें।

गगनान्न्यपतत् सद्यः सविमानो ह्यवाक्शिराः।
स वालखिल्यवचनादस्थीन्यादाय विस्मितः।
प्रास्य प्राचीसरस्वत्यां स्नात्वा धाम स्वमन्वगात्॥ ४०॥

वहाँ आते ही वे नीचे की ओर सिर किये विमानसहित आकाश से पृथ्वी पर गिर पड़े। इस घटना से उनके आश्चर्य की सीमा न रही। जब उन्हें वालखिल्य मुनियों ने बतलाया कि यह नारायणकवच धारण करने का प्रभाव है, तब उन्होंने उस ब्राह्मण देवता की हड्डियों को ले जाकर पूर्ववाहिनी सरस्वती नदी में प्रवाहित कर दिया और फिर स्नान करके वे अपने लोक को गये।

श्री शुक उवाच

य इदं शृणुयात् काले यो धारयति चादृतः।
तं नमस्यन्ति भूतानि मुच्यते सर्वतो भयात्॥ ४१॥

श्रीशुकदेवजी कहते हैं—परीक्षित्! जो पुरुष इस नारायण कवच को समय पर सुनता है और जो आदर पूर्वक इसे धारण

करता है, उसके सामने सभी प्राणी आदर से झुक जाते हैं और वह सव प्रकार के भयों से मुक्त हो जाता है।

एतां विद्यामधिगतो विश्वरूपाच्छतक्रतुः।
त्रैलोक्यलक्ष्मी बुभुजे विनिर्जित्य मृधेऽसुरान्॥४२॥

परीक्षित्! शतक्रतु इन्द्र ने आचार्य विश्वरूपजी से यह वैष्णवी विद्या प्राप्त करके रणभूमि में असुरों को जीत लिया और वे त्रैलोक्यलक्ष्मी का उपभोग करने लगे।

श्री सुदर्शन कवच (१)

ऊपरी बाधा, अला-बला, भूत, भूतिनी, यक्षिणी, प्रेतिनी किसी भी तरह की ओपरी विपत्ति में सुदर्शन कवच रक्षा करता है। यह अद्वितीय तान्त्रिक शक्ति से युक्त है। अतः सुदर्शन चक्र की भांति पाठक की सदैव रक्षा करता है।

"ॐ अस्य श्री सुदर्शन कवच महामन्त्रस्य नारायण ऋषि, श्री सुदर्शनोदेवता, गायत्रीश्छन्दः दृष्टं दारय इति कीलकम, हन हन द्विषय इति बीजम्, सर्व शत्रु क्षयार्थे सुदर्शन स्तोत्रपाठे विनियोगः॥ १॥

अथन्यासः

ॐ नारायण ऋषये नमः शिरसे स्वाहा। ॐ गायत्रीश्छन्दसे नमः मुखे नेत्रत्रयायवौषट। ॐ दुष्टं दारय दारयेति कीलकाय नमः हृदये कवचायहुम्। ॐ ह्रां ह्री हुं हुं द्विष इति बीजम् गुह्ये शिखायै वषट् ॐ सुदर्शन ज्वलत्पावक संकाशेति कीलकाय सर्वांगे अस्त्राय फट् इति ऋष्यादि। पश्चान्मूलमन्त्रेण न्यासध्यानं

कुयात्॥ २॥

अथ मूलमन्त्रः

"ॐ ह्रां ह्रीं नमो भगवते भो भो सुदर्शनचक्र दुष्टं दारय दारय दुरितं हन हन पापं मथ मथ आरोग्य कुरु कुरु हुं हुं फट् स्वाहा।" अनेन मूलमन्त्रेण पुरश्चरण कृत्यातदा आयुध सान्निध्यं भवति भवति॥ ३॥

अथ शत्रु नाशन प्रयोग मन्त्रः

ॐ ह्रीं ह्रीं हूं सुदर्शनचक्रराजन् दुष्टान् दह दह सर्वदुष्टान् भयं कुरु कुरु विदारय विदारय परमन्त्रान् ग्रासय ग्रासय भक्षय भक्षय द्रावय द्रावय हुं हुं फट्॥ ४॥

अथ मोहन मन्त्रः

ॐ हुं हन हन ह्रां ह्रां हन हन ओंकार हन हन ओं ह्रीं सुदर्शन चक्र सर्वजन वश्यं कुरु कुरु ठः ह्रा ठः ठः स्वाहा॥ ५॥

अथ लक्ष्मी प्राप्ति प्रयोग मन्त्रः

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ह्रां ह्रां सुदर्शनचक्र ममगृहे अष्टसिद्धिं कुरु कुरु ऐं क्लीं स्वाहा॥ ६॥

अथ आकर्षण प्रयोग मन्त्रः

ॐ ह्रां ह्री ह्री क्ली क्ली क्ली जंभय जंभय अमुकं आकर्षय आकर्षय मम वश्यं ज्री ज्री कुरु कुरु स्वाहा॥ ७॥ ॐ ह्रां षोडशावारं पूरकं कृत्वा श्रों ह्रां त्रिवष्टि बारं कुंभकं कृत्वा ॐ ह्रां द्वात्रिंशद्वारं रेचक कुर्यात्। इति प्राणायामः।

श्री सुदर्शन कवच (२)

ॐ अस्य श्री सुदर्शनकवचमालामन्त्रस्य। श्रीलक्ष्मीनृसिंहः परमात्मा देवता। मम सर्वकार्यसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ॐ क्षां अंगुष्ठाभ्यां नमः ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ श्रीं मध्यमाभ्यां नमः ॐ सहस्रार अनामिकाभ्यां नमः। ॐ हुं फट् कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ स्वाहा करतल-कर पृष्ठाभ्यां नमः एवं हृदयादि। ध्यानम् उपास्महे नृसिंहाख्यं ब्रह्मवेदान्तगोचरम्। भूयो लालित-संसारच्छेदहेतुं जगद्गुरुम्॥ मानस-पूजाः लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि। आकाशत्मिकं पुष्पं समर्पयामि यं वाय्वात्मकं धूपं समर्पयामि। रं बहन्यात्मकं दीपं समर्पयामि। वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि। सं सर्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि। नमस्करोमि। ॐ सुदर्शनाय नमः। ॐ आं ह्रीं क्रों नमो भगवते प्रलयकालमहाज्वालाघोर-वीर-सुदर्शन-नारसिंहाय ॐ महाचक्रराजाय महाबलाय सहस्रकोटिसूर्यप्रकाशाय सहस्रशीर्षाय सहस्राक्षाय सहस्रपादाय संकर्षणत्मने सहस्रदिव्याश्र-सहस्रहस्ताय सर्वतोमुखज्वलनज्वालामालावृताया विस्फुलिंगस्फोटपरिस्फोटित ब्रह्माण्ड भाण्डाय महापराक्रमाय महोग्रविग्रहाय महाविराय महाविष्णुरूपिणे व्यतीतकालान्तकाय महाभद्ररौद्रावताराय मृत्युस्वरूपाय किरीटहार-केयूर-ग्रेवेय-कटकांगुलयी-कटिसूत्र मजीरादिकनकमणिखचित दिव्यभूषणाय महाभीषणाय महाभीक्षया व्याहततेजोरूपनिधिय रक्त

चण्डान्तक मण्डितमदोरुकुण्डादुर्निरीक्षणाण प्रत्यक्षाय ब्रह्मचक्र विष्णुचक्र-कालचक्र-भूमिचक्र-तेजोरूपाय आश्रितरक्षाय। ॐ सुदर्शनाय विद्महे महाज्वालाय धीमहि। तन्नश्चक्रः प्रचोदयात् इति स्वाहा स्वाहा॥ (दो बार) भो भो सुदर्शन नारसिंह मां रक्षय रक्षय। ॐ सुदर्शनाय विद्महे महाज्वालाय धीमहि। तन्नश्चक्रः प्रचोदयात्॥ (दो बार) मम शत्रुन्नाशय नाशय ॐ सुदर्शनाय विद्महे महाज्वालाय धीमहि तन्नश्चक्र प्रचोदयात्॥ (दो बार) ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल चंड चंड प्रचंड प्रचंड स्फुर प्रस्फुर घोर घोर घोरतर घोरतर चट चट प्रचटं प्रचटं प्रस्फुट दह कहर भग भिंधि हंधि खटट प्रचट फट जहि जहि पय सस प्रलयवा पुरुषाय रं रं नोत्रग्निरूपाय। ॐ सुदर्शनाय विद्महे महाज्वालाय धीमहि। तन्नश्चक्रः प्रचोदयात् (दो बार) भो भो सुदर्शन नारसिंह माँ रक्षय रक्षय। ॐ सुदर्शनाय विद्महे महाज्वालाय धीमहि। तन्नश्चक्रः प्रचोदयात्॥ (दो बार) एहि एहि आगच्छ आगच्छ भूतग्रह-प्रेतग्रह-पिशाचग्रह-दानवग्रह कृतिमग्रह-प्रयोगग्रह-आवेशग्रह-आगतग्रह-अनागतग्रहान ब्रह्मग्रह-रुद्रग्रह-पाताल-निराकारग्रह-आचारअनाचारग्रह-ननजातिग्रह-भूचरग्रह-खेचरग्रह - वृक्षचरग्रह - पीक्षिचरग्रह - गिरिचरग्रह-शमशानचरग्रह - जलचरग्रह - कूपचरग्रह - देगारचलग्रह-शून्याचारचरग्रह-स्वप्नग्रह-दिवामनोग्रह-बालग्रह-मूकग्रह-मूखग्रह-बधिरग्रह-स्त्रीग्रह-पुरुषग्रह-यक्षग्रह-राक्षसग्रह-प्रेतग्रह-किन्नरग्रह-साध्यचरग्रह-सिद्धचरग्रह कामिनीग्रह-

मोहिनीग्रह-पद्मिनीग्रह-यक्षिणीग्रह-पक्षिणीग्रह-सँध्याग्रह-मार्गग्रह-कलिंगदेवोग्रह-भैरवग्रह-बेतालग्रह-गन्धर्वग्रह प्रमुखसकलदुष्टग्रह रातांन् आकर्षय आकर्षय आवेशय ड ड ठ ठ ह्यय वाचय दह्य भस्मी कुरू उच्चाटय उच्चाटय। ॐ सुदर्शन विद्महे महाज्वाला धीमहि। तन्नश्चक्रः प्रचोदयात्॥ (दो बार) ॐ क्षां क्षीं क्षुं क्षें क्षों क्षः भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रें भ्रौं भ्रः ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रों हः घ्रां घ्रीं घ्रुं घ्रें घ्रों घ्रः श्रां श्रीं श्रूं श्रें श्रों श्रः। ॐ सुदर्शनाय विद्महे महाज्वालाय धीमहि। तन्नश्चक्रः प्रचोदयात्॥ (दो बार) एहि एहि सालवं संहारय शरभं क्रंदया विद्रावय विद्रावय भैरव भीषय भीषय प्रत्यगिरि मर्दय मर्दय चिदम्बरं बन्धय बन्धय विडम्बरं ग्रासय ग्रासय शांर्भवां निवतंय कालीं दह दह महिषासुरीं छेदय छेदय दुष्टशक्ति निर्मूलय निर्मूलय रूं रूं हूं हूं मुरु मुरु परमंत्रपरयंत्र-परतंत्र कटुपरं वादुपर जप पर होमपर सहस्रदीपकोटिपूजां भेदय भेदय मारय मारय खंडय खंडय परकतृकं विषं निर्विषं कुरु कुरु अग्निमुख प्रकाण्ड नानाविधि-कतृंमुख वनमुखंग्रहान् चूर्णय चूर्णय मारी विदारय कूष्माडं वैनायक मारीचगणान् भेदय भेदय मन्त्रांपरस्मांकं विमोचय विमोचय अक्षिशूलकुक्षिशूल-गुल्मशूल-पाश्र्व-शूल-सर्वाबाधां निवारय निवारय पांडुरोगं संहारय संहारय विषमज्वरं त्रासय त्रासय एकाहिकं द्वाहिकं त्रयाहिकं चातुर्थिकं पंचाहिकं षष्टज्वर सप्तमज्वरं अष्टमज्वरं नवमज्वरं प्रेतज्वरं पिशाचज्वरं दानवज्वरं महाकालज्वरं दुर्गाज्वरं ब्रह्माविष्णुज्वरं माहेश्वरज्वरं चुतुःषष्टीयोगिनी ज्वरं गंधर्वज्वरं

बेतालज्वरं एतान् ज्वारान्नाशय नाशय दोषं मंथय मंथय दुरित हर हर अन्नतवासुकि तक्षक कालौय पद्म कुलिक ककोर्टक शख पालाद्यष्टनागकुलानां विषं हन हन खं खं घं घं पाशुपतं नाशय नाशय शिखण्डिं खंडय खंडय ज्वालामालिनीं निवर्तय सर्वेन्द्रियाणि स्तंभय स्तंभय खंडय खंडय प्रमुखदुष्टतंत्र स्फोटय स्फोटय भ्रामय भ्रामय महानारायणस्त्राय पंचाशद्वर्णरूपाय लल लल शरणागतरक्षणाय हुं हूं गं व गं व शं शं अपृतमूर्तये तभ्यं नमः। ॐ सुदर्शनाय विद्महे महाज्वालाय धीमहि। तन्नश्चक्रः प्रचोदयात्॥ (दो बार) भो भो सुदर्शन नारसिंह मां रक्षय रक्षय। ॐ सुदर्शनाय विद्महे महाज्वालाय धीमहि। तन्नश्चक्रः प्रचोदयात्॥ मम सर्वारिष्टशातिं कुरु कुरु सर्वतो रक्ष रक्ष ॐ ह्रीं हूँ फट् स्वाहा। ॐ क्ष्रों ह्रीं श्रीं सहस्त्रार हूं फट् स्वाहा।

महा मृत्युञ्जय कवच (१)

जब किसी कारण से रोगादि देह को स्वतन्त्र न करते हों, जब मारकेश जन्मकुण्डली में हो, गृहक्लेश होने लगे तब इस कवच का पाठ करें।

भैरव उवाच

शृणुष्व परमेशानि कवचं मन्मुखोदितम्।
महामृत्युञ्जयाख्यस्य न देयं परमाद्भुतम्॥ १॥
यं धृत्वां यं पठित्वा च श्रुत्वा च कवचोत्तमम्।
त्रैलोक्याधिपतिर्भूत्वा सुखितोऽस्मि महेश्वरि॥ २॥
तदेववर्णयिष्यामि तव प्रीत्यावरानने।
तथापि परमं तत्त्वं न दातव्यं दुरात्मने॥ ३॥
अस्य श्रीमहामृत्युञ्जयकवचस्य भैरव ऋषिः।
गायत्रीछन्दः मृत्युञ्जयरुद्रो महादेवो देवता।
ॐ बीजं जूं शक्तिः। सः कीलकम्।

हौमितितत्त्वं चतुर्वर्गसाधने विनियोगः।
चन्द्रमण्डल-मध्यस्थे रुद्रभाले विचिन्तयते।
तत्रस्थं चिन्तयेत् साध्यं मृत्युमाप्नोपि जीवति॥ १॥
ॐ जूं सः हौं शिरं पातु देवो मृत्युञ्जयो मम।
ॐ श्रीं शिवो ललाटं च ॐ ह्रौं भ्रुवो सदाशिवः॥ २॥
नीलकण्ठोऽवतान्नेत्रे कपर्दो मेऽवताच्छ्रुती।
त्रिलोचनोऽवताद गण्डौ नासा मे त्रिपुरानतकः॥ ३॥
मुखं पीयूषघटमृदोष्ठौ में कृत्तिकाम्बरः।
हनुं मे हाटकेशानो मुखं बटुक—भैरवः॥ ४॥
कन्धरां कालमथनो गलं गण-प्रियोऽवतु।
स्कन्धौ स्कन्दपिता पातु हस्तौ मे गिरिशोऽवतु॥ ५॥
नखान् में गिरिजानाथः पायादङ्गुलिसंयुतान्।
स्तनौ तारापतिः पातु वक्षः पशुपतिर्मम॥ ६॥
कुक्षिं कुबेर-वरदः पार्श्वौ मे मारशासनः।
सर्वः पातु तथा नाभिं शूली पृष्ठं ममावतु॥ ७॥
शिश्नं मे शङ्करः पातु गुह्यं गुह्यक-वल्लभः।
कटिं कालान्तकः पायाद्रूमेऽन्धंकघातनः॥ ८॥
जागरूकोऽवताञ्जनू जङ्घे मे कालभैरवः।
गुल्फौ पायज्ञटाधारी पादौ मृत्युञ्जयोऽवतु॥ ९॥
पादादिमूर्धपर्यन्तमघोरः पातु मां सदा।
शिरसः पादपर्यनतं सद्योजातो ममावतु॥ १०॥
रक्षाहीनं नामहीनं वपुः पातु मृतेश्वरः।
पूर्वे बलविकरणो दक्षिणे कालशासनः॥ ११॥

पश्चिमे पार्वतीनाथो उत्तरे मां मनोन्मनं।
ऐशान्यामीश्वरः पायादाग्नेय्यामग्निलोचनः॥ १२॥
नैऋत्यां शम्भुख्यान्मां वायव्यां वायुवाहनः।
उर्ध्वे बलप्रमथनः पाताले परमेश्वरः॥ १३॥
दशदिक्षु सदा पातु महामृत्युञ्जयश्च माम्।
रणे राजकुले द्यूते विषमे प्राणसंशये॥ १४॥
पायादों जूं मारुद्रो देव-देवो दशाक्षरः।
प्रभाते पातु मां ब्रह्मा मध्याह्ने भैरवोऽवतु॥ १५॥
सायं सर्वेश्वरः पातु निशायां नित्यचेतनः।
अर्धरात्रे महादेवो निशान्ते मां महोमयाः॥ १६॥
सर्वदा सर्वतः पातु ओं जूं सः हौं मृत्युञ्जयः।
इतीदं कवचं पुण्यं त्रिषु लोकेषु विश्रुतम्॥ १७॥
सर्वमन्त्रमयं गुह्यं सर्वतन्त्रेषु गोपितम्।
पुण्यं पुण्यप्रदं दिव्यं देवदेवाधिदैवतम्॥ १८॥
य इदं च पठेन्मन्त्री कवचं वाचयेत्ततः।
तस्य हस्ते महादेवि त्र्यम्बकस्याष्टसिद्धयः॥ १९॥
रणे धृत्वा चरद्युद्धं हत्वा शत्रून् जयं लभेत्।
जपं कृत्वा गृहे देवि सम्प्राप्स्यति सुखं पुनः॥ २०॥
महाभये महारोगे महामारीमये तथा।
दुर्भिक्षे शत्रुसंहारे पठेत् कवचमादरात्॥ २१॥
सर्वं तत् प्रशमं याति मृत्युञ्जयप्रसादतः।
धनं पुत्रान् सुखं लक्ष्मीमारोग्यं सर्वसम्पदः॥ २२॥

प्राप्नोति साधकाः सद्यो देवि सत्यं न संशयः।
इतीदं कवचं पुण्यं महामृत्युञ्जयस्य तु॥ २३॥
गोप्यं सिद्धिप्रदं गुह्यं गोपनीयं स्वयोनिवत्।

श्री महा मृत्युञ्जय कवच (२)

श्रीदेव्युवाच। भगवन् सर्वधर्मज्ञ सृष्टिस्थितिलयात्मक। मृत्युंजयस्य देवस्य कवचं में प्रकाशय॥ श्री ईश्वर उवाच॥ शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कवचं सर्वसिद्धिदम्। मार्कण्डेयोऽपि यद्धृत्वा चिरंजीवी व्यजायत॥ तथैव सर्वदिक्पाला अमरावमवाप्नुयुः। कवचस्य ऋषिर्ब्रह्मा छन्दोऽनुष्टुबुदाहतन्॥ मृत्युंजयः समुद्दिष्टो देवता पार्वतीपतिः। देहारोग्यदलायुष्ट्वे विनियोगः प्रकीर्तितः। ओं त्र्यम्बकं मे शिरः पातु ललाटं मे यजामहे। सुगन्धिं पातु हृदयं जठरं पुष्टिवर्धनम्॥ नाभिमुर्वारुकमिव पातु मां पार्वतीपतिः। वन्धनादूरुयुग्मं मे पातु वामाङ्गशासनः॥ मत्योर्जानुयुगं पातु दक्षयज्ञविनाशनः। जंघायुग्मं च मुक्षीय पातु मां चन्द्रशेखरः॥ मामृताच्च पदद्वन्द्वं पातु सर्वेश्वरो हरः। प्रसी मे श्रीशिवः पातु नीलकण्ठश्च पार्श्वयोः॥ ऊर्ध्वमेव सदा पातु सोमसूर्याग्निलोचनः। अधः पातु सदा शम्भुः सर्वापद्विनिवारणः॥ वारुण्यामर्धनारीशो वायव्यां पातु शंकरः। कपर्दो पातु कौवेर्यामैशान्यां ईश्वरोऽवत्॥ ईशानः सलिले पायदघोरः पातु कानने। अन्तरिक्षे वामदेवः पायात्तत्पुरुषो भुवि॥ श्रीकण्ठः शयने पातु भोजने नीललोहितः। गमने त्र्यम्बकः पातु सर्वकार्येषु भुवतः। सर्वत्र

सर्वदेहं मे सदा मृत्युंजयोऽवतु। इति ते कथितं दिव्यं कवचं सर्वकामदम्॥ सर्वरक्षाकरं सर्वग्रहपीड़ा-निवारणम्। दुःस्वप्ननाशनं पुण्यमायुरारोग्यदायकम्॥ त्रिसंध्यं यः पठेदेतन्मृत्युतस्य न विद्यते। लिखितं भूर्जपत्रे तु य इदं मे व्यधारयेत्॥ तं दृष्टैव पलायन्ते भूतप्रेतपिशाचकाः। डाकिन्यश्चैव योगिन्यः सिद्धगन्धर्वराक्षसः॥ बालग्रहादिदोषा हि नश्यन्ति तस्य दर्शनात्। उपग्रहाश्चैव मारीभयं चौराभिचारिणः॥ इदं कवचमायुष्यं कथितं तव सुन्दरि। न दातव्यं प्रयत्नेन न प्रकाश्यं कदाचन॥

मृत संजीवनी कवच

जब मृत देह को अधिक काल तक सुरक्षित रखना हो, जब भी कोई देह त्याग करने लगे अर्थात प्राणान्त के समय संजीवनी कवच का पाठ अति उत्तम है।

एवमाराध्य गौरीशं देवं मृत्युं जयेश्वरम्।
मृतसंजीवनं नाम्नां कवचं प्रजपेत्सदा॥ १॥
सारात्सारतरं पुण्यं गुह्याद् गुह्यतरं शुभम्।
महादेवस्य कवचं मृतसंजीवनामकम्॥ २॥
समाहितमना भूत्वा शृणुष्व कवचं शुभम्।
श्रुत्वैतद्दिव्यकवचं रहस्यं कुरु सर्वदा॥ ३॥
वराभयकरो यज्वा सर्वदेवनिषेवितः।
मृत्युंजयो महादेवः प्राच्यां मां पातु सर्वदा॥ ४॥
दधानः शक्तिमभयां त्रिमुखः षड्भुजः प्रभुः।
सदाशिवोऽग्निरूपी मामाग्नेय्यां पातु सर्वदा॥ ५॥

अष्टादशभुजोपेतो दण्डाभयकरो विभुः।
यमरूपी महादेवो दक्षिणस्यां सदाऽवतु॥ ६॥
खड्गाभयकरो धीरो रक्षोगणनिषेवितः।
रक्षोरूपी महेशो मां नैर्ऋत्यां सर्वदाऽवतु॥ ७॥
पाशाभयभुजः सर्वरत्नाकरनिषेवितः।
वरुणात्मा महादेवः पश्चिमे मां सदाऽवतु॥ ८॥
गदाभयकरः प्राणनायकः सर्वदागतिः।
वायव्यां मारुतात्मा मां शंकरः पातु सर्वदा॥ ९॥
शङ्खाभयकरस्थो मां नायकः परमेश्वरः।
सर्वात्मान्तरदिग्भागे पातु मां शंकरः प्रभुः॥ १०॥
शूलाभयकरः सर्वविद्यानामधिनायकः।
ईशानात्मा तथैशान्यां पातु मां परमेश्वरः॥ ११॥
ऊर्ध्वभागे ब्रह्मरूपी विश्वात्माऽधः सदाऽवतु।
शिरो मे शंकरः पातुः ललाटं चन्द्रशेखरः॥ १२॥
भ्रूमध्यं सर्वलोकेशस्त्रिनेत्रो लोचनेऽवतु।
भ्रूयुग्मं गिरिशः पातु कर्णौ पातु महेश्वरः॥ १३॥
नासिकां मे महादेव ओष्ठौ पातु वृषध्वजः।
जिह्वां मे दक्षिणमूर्तिर्दन्तानमे गिरिशोऽवतु॥ १४॥
मृत्युंजयो मुखं पातु कण्ठं मे नागभूषणः।
पिनाकी मत्करौ पातु त्रिशूली हृदयं मम॥ १५॥
पञ्चवक्त्रः स्तनौ पातु उदरं जगदीश्वरः।
नाभिं पातु विरूपाक्षः पार्श्वौ मे पार्वतीपतिः॥ १६॥

कटिद्वयं गिरिशो मे पृष्ठं मे प्रमथाधिपः।
गुह्यं महेश्वरः पातु ममोरू पातु भैरवः॥ १७॥
जानुनी मे जगद्धर्ता जंघे मे जगदम्बिका।
पादौ मे सततं पातु लोकवन्द्यः सदाशिवः॥ १८॥
गिरिशः पातु मे भार्यां भवः पातु सुतान्मम।
मृत्युंजयो ममायुष्यं चित्तं मे गणनायकः॥ १९॥
सर्वाङ्गं मे सदा पातु कालकालः सदाशिवः।
एतत्ते कवचं पुण्यं देवतानां च दुर्लभम्॥ २०॥
मृतसंजीवनं नाम्नां महादेवेन कीर्तितम्।
सहस्रावर्तनं चास्य पुरश्चरणमीरितम्॥ २१॥
यः पठेच्छ्रृणुयान्नित्यं श्रावयेत्सुसमाहितः।
स कालमृत्युं निर्जित्यं सदायुष्यं समश्नुते॥ २२॥
हस्तेन वा यदा स्पृष्टवा मृतं संजीवयत्यसौ।
आधयो व्याधयस्तस्य न भवन्ति कदाचन॥ २३॥
कालमृत्यमपि प्राप्तमसौ जयति सर्वदा।
अणिमादिगुणैश्वर्यं लभते मानवोत्तमः॥ २४॥
शुद्धारम्भे पठित्वेदमष्टाविंशतिवारकम्।
युद्धमध्ये स्थितः शत्रुः सद्यः सर्वैर्न दृश्यते॥ २५॥
न ब्रह्मादीनि चास्त्राणि क्षयं कुर्वन्ति यस्य वै।
विजयं लभते देवयुद्धमध्येऽपि सर्वदा॥ २६॥
प्रातरुत्थाय सततं यः पठेत्कवचं शुभम्।
अक्षय्यं लभते सौख्यमिह लोके परत्र च॥ २७॥

सर्वव्याधिविनिर्मुक्तः सर्वरोगविवर्जितः।
अजरामरणो भूत्वा सदा षोडषवार्षिकः॥ २८॥
विचरत्यखिलाँल्लोकान्प्राप्य भोगांश्च दुर्लभान्।
तस्मादिदं महागोप्यं कवचं समुदाहृतम्॥ २९॥
मृतसंजीवनं नाम्ना दैवतैरपिदुर्लभम्॥ ३०॥

शीतला स्तुति

शीतले त्वं जगन्माता शीतले त्वं जगत्पिता,
शीतले त्वं जतद्धात्री शीतलायै नमोनयः।

पीपल स्तुति

अश्वत्थ हुत भुग्वास गेरविन्दस्य सदाप्रिय,
अशेष हर मे पापं वृक्षराज नमोस्तुते।

तुलसी स्तुति

देवैः त्वं निर्मिता पूर्वम् अर्चितासि मुनीश्वरैः,
नमो नमस्ते तुलसी पाप हर हरप्रिये।

प्रदक्षिणा मन्त्र

यानि कानि च पापानि जन्मन्तार कृतानि च,
तानि तानि विनश्यन्तु प्रदक्षिणे पदे पदे।

विसर्जन मन्त्र

यजमान हितार्थाय पुनरागमनाय च,
गच्छन्तु च सुरश्रेष्ठा! स्वस्थानं परमेश्वर।

तुलसी ग्रहण मन्त्र

तुलसी हेमरूपेण रत्नरूपेण मंजरीम्,
भव मोक्ष प्रदां तुभ्यं अपर्यामि हरि प्रियं।

क्षमा प्रार्थना

अपराध सहस्त्राणि क्रियन्ते अर्हनिशं मया,
दासः अयमिति माँ मत्वा क्षमस्व परमेश्वर।
आवाहनं न जानामि, न जानामि विसर्जनम्,
पूजां चैव न जानामि, क्षम्यतां परमेश्वर।
अन्यथा शरणं न अस्ति त्वमेव शरणं मम,
तस्मात् कारूण्य भावेन रक्ष माँ परमेश्वर।
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दन,
यत्पूजितं मया देव परिपूर्ण तदस्तु मे।
यदक्षर पदभ्रष्ट मात्राहीनं च यद् भवेत्,
तत्सर्व क्षम्यतां देव! प्रसीद परमेश्वर।

ॐ

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार